

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

02-सितम्बर-2014 20:11 IST

**टीसीएस जापान टेक्नोलॉजी एवम् सांस्कृतिक अकादमी के उद्घाटन के पश्चात प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दी गयी
टिप्पणी का मूल पाठ**

मैं टीसीएस जापान का आभारी हूँ कि एक अच्छा इनिशिएटिव आपने लिया है। वैसे एक जमाना था जब नालंदा और तक्षशिला यूनिवर्सिटीस थीं, तो दुनिया के स्टूडेंट्स भारत में जाते थे, सीखने के लिए, समझने के लिए, देखने के लिए। सबसे पहली यूनिवर्सिटी 2600 इयर ओल्ड थी, भारत के साहित्य में इसका उल्लेख आता है, छब्बिंश सौ साल पहले। उस समय, जैसे मैं जिस स्टेट से आता हूँ, 'गुजरात', वहाँ एक बललिभ यूनिवर्सिटी थी, वो 2600 साल पुरानी थी और 89 कंट्री के स्टूडेंट्स उस समय वहाँ पढ़ाई करते थे। नालंदा एक ऐसी यूनिवर्सिटी थी जहाँ जापान के बहुत लोग पढ़ने के लिए आते थे।

भारत की एक विशेषता रही है जब जब मानव जाति ने ज्ञानरूप में प्रवेश किया, तब हमेशा नेतृत्व भारत का रहा। 21वीं सदी ज्ञान की सदी है और इसलिए जिसके पास अस्त्र होंगे, शस्त्र होंगे, धन होगा, दौलत होगी उस से ज्यादा वही देश दुनिया को लीड करेगा, जिसके पास ज्ञान है, इन्फर्मेशन है, वही सबसे बड़ा मैटर करने वाला है।

इसीलिए इन्फर्मेशन के इस युग में, ज्ञान के इस युग में, मुझे विश्वास है कि आप लोग जो भारत जा रहे हैं, जरूर आपके ज्ञान में इज़ाफा होगा, आपके इन्फर्मेशन में इज़ाफा होगा। वैसे भी हमारे यहाँ एक कहावत है 'जो फरे, ते चरे। मतलब, जो ज्यादा घूमता है वो जप करता है।

मेरी आप सबको बहुत बहुत शुभकामनाएं हैं, लेकिन एक आग्रह है, आप भारत में आयें तो टीसीएस के कमरे में बंद मत हो जाना, सर्टिफिकेट थोड़ा खर्चा करना और मेरे हिन्दुस्तान की ओर जगहों पर घूमना। इतना पुरातन देश है और देखने जैसा है और उसकी हर बारीकियों का अध्ययन करना और जब वापिस आएंगे तब टीसीएस के नहीं, भारत के एम्बेस्डर बनकर आइये। आप भारत के ऐसे मजबूत एम्बेस्डर बनकर आइए कि जापान से बहुत बड़ी मात्रा में टूरिस्ट, हिन्दुस्तान की ओर जाने के लिए प्रेरित हो जायें।

आपके वहाँ, अगर आप छह महीना रहते हैं और पर-डे तय करें कि मुझे नई डिश खानी है, एक बार भी रिपीट नहीं करनी है और मैं दावे से कहता हूँ, छह महीने तक आप रोज नई डिश खा सकते हैं। अगर आप पुणे में जाएंगे तो वहाँ खाना अलग होगा, अगर आप अहमदाबाद में जाएंगे तो वहाँ खाना अलग होगा। इतनी विविधताओं से भरा हुआ देश है। अगर आप खुलेपन से वहाँ जाओगे, तो पता नहीं, जो आप कमरे में बैठकर के सीखने वाले हो, उससे ज्यादा कमरे के बाहर सीखने को मिलेगा।

तो मेरी, आपके इस इनिशिएटिव के लिए, टीसीएस के सभी मित्रों को मेरी बधाई है और जिनको भारत आने का सौभाग्य मिला है, उनको मेरी शुभकामनाएं हैं। मुझे विश्वास है कि वहाँ से बहुत सी अच्छी स्मृतियाँ लेकर आप यहां लौटेंगे और सच्चे अर्थ में आप, भारत के एक अच्छे एम्बेसडर बनोगे, यह मेरा विश्वास है।

बहुत-बहुत धन्यवाद, बहुत-बहुत शुभकामनायें।

अमित कुमार/ शिशिर चौरसिया/ तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

02-सितम्बर-2014 21:23 IST

तोक्यो में भारतीय समुदाय के स्वागत समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दी गयी टिप्पणी का मूल पाठ

जापान में बसे हुए सभी मेरे भारतीय भाइयों एवं बहनों,

ये जो बच्चे गीत गा रहे थे, मैं करीब 25-30 साल पहले हर दिन इस गीत को गुनगुनाता था। यह मेरा बड़ा प्रिय गीत था। तो आज मेरी सारी थकान उतर गई और उसी मिजाज से बच्चे गा रहे थे, जो ओरिजिनल है। जबसे मैंने सुना है, वैसे ही मैं भी गुनगुनाता था। आज भी मेरा मन कर गया तो आपके साथ जुड़ गया था। इन बच्चों को बहुत बहुत बधाई। ये समझ लेते हैं, जो मैं बोल रहा हूँ?

जापान में पहले भी आया हूँ। यहां के भारतीय समाज से भी मेरा मिलने का अवसर मुझे हमेशा मिला है। आप लोगों को सुनने का भी अवसर मिला है और कुछ कहने का भी अवसर मिला है। दुनिया के किसी भी देश में जाइए, तो अगर कोई भी भारतीय मिलता है तो, दो-तीन चीजें प्रमुख रूप से आती हैं। साफ एयरपोर्ट पर उतरे और ऐसा हुआ। टैक्सीवाला मिला, तो ऐसा हुआ। साफ शौचालय, वाश रूम। ये चार-पांच चीजें कॉमन सुनने को मिलती हैं। और बहुत स्वाभाविक है कि इतने सालों से यहां रहने बाद, यह सामान्य है और इसलिए मैंने देश में सबसे बड़ा एक काम जो उठाया है, वह है स्वच्छ भारत का।

कठिन काम है, लेकिन किसी को तो शुरू करना चाहिए। मैंने देशवासियों के सामने एक बात रखी है कि 2019 जो, महात्मा गांधी के 150वीं जयंती का वर्ष है और महात्मा जी को सबसे प्रिय अगर कोई चीज थी तो सफाई थी। आपने महात्मा गांधी के जीवन को पढ़ा होगा, कहीं बचपन में कुछ बातें सुनने को मिली होगी तो ये बात हमेशा आती होगी। वे सफाई के संबंध में कभी कंपरमाइज नहीं करते थे। बड़े अग्रणी रहते थे। आप वर्धा का आश्रम देखिए, साबरमती का आश्रम देखिए। बहुत ही सिंपल थे। व्यवस्थाओं की दृष्टि से कोई बहुत नहीं था, लेकिन सफाई के संबंध में कोई कंपरमाइज नहीं करते थे। इसलिए मैंने देशवासियों के सामने एक बात रखी कि महात्मा गांधी ने हमें आजादी दिलाई, इतनी बड़ी सौगात महात्मा गांधी जी हमें दे के गए, हमने महात्मा जी को क्या दिया ? कुछ तो हमें लौटाना चाहिए। और इसलिए मैं देशवासियों से कहता रहता हूँ कि 2019 तक ऐसा साफ-सुथरा हिंदुस्तान बना दें और 2019 में एकदम साफ-सुथरा हिंदुस्तान महात्मा जी को अर्पित करें।

तो आप भी अपने रिश्तेदारों को चिट्ठी लिखते होंगे यहां से, लेकिन अब चिट्ठी तो नहीं लिखते होंगे, ईमेल करते होंगे, वाट्स अप पर बात करते होंगे। ट्वीटर पर दोस्ती बनाई होगी। माध्यम कोई भी हो लेकिन बात जरूर पहुंचाएँ आप कि हमारे जापान में ऐसी सफाई होती है, आप भी यह काम कीजिए। अपने परिवार में कीजिए, अपने अड़ोस-पड़ोस में कीजिए। ये भी करने जैसा काम है, और मुझे विश्वास है कि आप भी इस काम को अवश्य करेंगे।

भारतीय समुदाय की एक विशेषता रही है और हम लोग इस बात का गर्व जितनी मात्रा में करना चाहिए, नहीं करते हैं। बड़ी दबी जबान में, हल्के-फुल्के, ऐसे करते हैं। विश्व में कहीं पर भी अगर भारतीय समाज गया, 100 साल पहले गया, 150 साल पहले गया, कहीं पर भी गया हो, किसी भी देश से, उस समाज से अब तक कोई शिकायत नहीं आई है कि हिंदुस्तानियों ने आकर ऐसा कर दिया, हमें लूट लिया। ये छोटे संस्कार नहीं हैं जी, ये संस्कार छोटे नहीं हैं।

विश्व का कोई भी समाज, कहीं पर भी व्यक्तिगत रूप से किसी से कोई गलती हुई होगी, अच्छा बुरा हो गया होगा। लेकिन समाज के रूप में दुनिया में कहीं से कोई शिकायत भारतीय समुदाय के लिए नहीं आई है। ऊपर से सुनने को क्या मिलता है भई, ये बड़े लॉ एबाइडिंग सिटीजंस हैं, बहुत ही सरल हैं, हमारी इकोनोमी में कंट्रीब्यूट करते हैं, लेकिन समस्या कभी पैदा नहीं करते हैं।

ये हमारी विरासत है। हमारी पूंजी है और पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारों से यह बनी है। और इसका श्रेय आप सबको जाता है। आपने ये करके दिखाया है। इसलिए मैं विशेष रूप से आपको बधाई देता हूँ, आपका अभिनंदन करता हूँ।

एम्बेसी में आ करके भारत क्या है, जल्दी कोई समझ नहीं पाएगा। लेकिन आपसे मिल कर के तुरंत समझ पाएगा कि भारत क्या है। आप भारत को कैसे जीते हैं, आप भारत को कैसे अभिव्यक्त करते हैं। भारत की बात को गौरव से कैसे प्रस्तुत करते हैं। उस पर निर्भर करता है।

जमाना ऐसा था मुझे याद है, बहुत साल पहले मैं ताईवान गया था, तब तो मैं इस सरकारी नौकरी में नहीं था। ऐसे ही, एक नागरिक के नाते गया था। और सात-आठ दिन, मेरे पास उन दिनों समय भी बहुत रहता था। कोई काम-धाम तो था नहीं। मेरे साथ वहां की सरकार ने एक इंटरप्रेटर लगाया था। इंटरप्रेटर पढ़ा लिखा था, कंप्यूटर इंजीनियर था। मेरे साथ इंटरप्रेटर के रूप में काम करता था। उसकी मदद के बिना हमारी गाड़ी चलती नहीं थी। दोस्ती हो गई हमारी, 5-6 दिन में। पहले तो बड़ा ही नियम से रहता था, प्रोटोकॉल में रहता था। शायद वह एमईए डिपार्टमेंट का ही होगा। जिसमें सबसे ज्यादा प्रोटोकॉल होता है। वह भी ऐसे ही रहता था। थोड़ा सा भी इधर-उधर खिसकता नहीं था। लेकिन 5-6 दिन में मेरा व्यवहार देखकर के उसकी लगा कि हां ये आदमी दोस्ती करने जैसा है। फिर दोस्ती हो गई। बातें करने लगा। आखिर एक-दो दिन बाकी थे तो उन्होंने एक सवाल पूछा। बोला, साहब, आपको बुरा न लगे तो मुझे कुछ पूछना है, मैंने कहा जरूर पूछिये। उन्होंने कहा- बुरा नहीं लगेगा, मैंने कहा पूछो भाई, कुछ भी बुरा नहीं लगेगा। बोले, सचमुच में आपको बुरा नहीं लगेगा, उसने बड़ा डरते-डरते ये पूछा, फिर मुझे कहता है मैं ताईवान की 20वीं सदी के उत्तरार्ध की घटना कह रहा हूं आपको। ब्रिटिश सेंचुरी के लास्ट इयर की। उन्होंने कहा है कि आज भी भारत में जादू-टोना वाले लोग रहते हैं? आज भी भारत में ब्लैक मैजिक चलता है ? आज भी भारत में सांप-छूछंदर वाला सारा खेल चलता है और वो ये मानता था कि हिंदुस्तान में संपेरे लोग ही रहते हैं। यानी, आप कल्पना कीजिए, दुनिया इतनी बदल चुकी है, वह एक कंप्यूटर इंजीनियर था, लेकिन उस देश में हमारी छवि यह थी।

मैंने कहा भाई, अब तो हम सांप वाले नहीं रहे। हमारा बहुत डिवेल्यूएशन हो गया। पीढ़ी दर पीढ़ी हम और हल्के-फुल्के हो गए। बेचारा समझा नहीं। मैंने कहा, पहले हम सांप से खेलते थे, अब हम माउस से खेलते हैं। पहले हम और सांप का खेल चलता था और अब हमारा डिवेल्यूएशन, डिग्रेडेशन होते होते हम माउस से ऐसे जुड़ गए कि अब हम माउस को हिलाते हैं, तो दुनिया पूरी हिलती है।

हमारे देश 20- 22- 24 साल के नौजवानों ने दुनिया को अचंभित कर दिया, इंफोर्मेशन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में। पूरे विश्व को भारत की ओर देखने का नजरिया बदलना पड़ा। कोई सरकार, कोई पीआर एजेंसी, अरबों-खरबों का बजट जो काम नहीं कर सकता था, वह हिंदुस्तान के 20- 22 साल के नौजवानों ने कंप्यूटर पर उंगली घुमा-घुमा कर, दुनिया का रूप बदल दिया है।

ये ताकत है देश की। इसका गर्व करता है इंडिया। विश्व के सामने हमें अपने इंडिया पर गर्व होता है। आप दुनिया का कोई भी देश देख लीजिए, क्या दुनिया के देशों में कठिनाइयां नहीं होगीं, होगीं। तकलीफें नहीं होगीं, होगीं। अच्छे-बुरे इंसान नहीं होंगे? होंगे। लेकिन विश्व का वही समाज आगे बढ़ता है जो अपने अच्छाइयों को लेकर के जीता है। रौने बैठा नहीं है। छोड़ो यार। पता नहीं पिछले जन्म में क्या पाप किया है, हिंदुस्तान में जन्म लिया। अच्छा होता मैं किसी और देश में पैदा हुआ होता। ऐसा समाज दुनिया में कभी कुछ नहीं कर सकता है।

अपने पास जो भी है, उसके लिए जो गर्व करता है, स्वाभिमान से जीता है और इसलिए हम दुनिया में कहीं भी रहें, दुनिया भी सारी अच्छी चीजों पर गर्व करें, लेकिन अपने स्वाभिमान के प्रति कभी भी कंपरमाइज नहीं करना चाहिए। यह अपने आप में बहुत बड़ी ताकत है। देखिए, भगवान राम श्रीलंका गए थे। लंका गए, सोने की लंका गए। आखिर वो भी इंसान तो थे। कौन मोहित नहीं हो जाता। लेकिन सोने की नगरी में विजयी हो के खड़े रहने के बाद भी वह कहते क्या हैं, 'स्वर्गादपि गरियसी'। अयोध्या के लिए यह भाव था उनके मन में। मेरा अयोध्या जैसा भी हो, गरीबी होगी, कठिनाइयां होंगी, भले तुम्हारी लंका सोने की हो, तुम्हें मुबारक। मेरे लिए तो 'स्वर्गादपि गरियसी'। ये जो सबक है, संदेश है, वह हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

मैं चाहूंगा, विश्वभर में फैला हुआ हिंदुस्तान का कोई भी नागरिक हो, उसके हृदय में यह भाव बना रहना चाहिए। जिन लोगों ने, कैरिबियन कंट्रीज में हमारे लोग गए, सवा सौ-डेढ़ सौ साल पहले गए, मजदूर के रूप में गए। अंग्रेज उनको मजदूर के रूप में उठा के ले जाते थे। जो जेल में कैदी थे, उनको उठा के ले जाते थे। वहां छोड़ देते थे। उन लोगों ने वहां जाकर देश बनाए। वहां जाकर देखिए। देखिए आज भी एक रामायण की चौपाइयों के भरोसे उन्होंने हिंदुस्तान के साथ अपना नाता बनाये रखा है। यानी अपना जो मूल है, नाभी से ही तो प्राण तत्व मिलता है, नाभी से कभी नाता टूटना नहीं चाहिए। नाभी से नाता कैसे बना रहे, इसके लिए निरंतर प्रयास होना चाहिए।

हम किसी भी देश में क्यों न हो। लेकिन ये तो तय कर सकते हैं कि कम से कम खाना खाते समय शाम को सब इकट्ठे

बैठेंगे। तीन पीढ़ी होगी तो तीन पीढ़ी, दो पीढ़ी होगी तो दो पीढ़ी, चार पीढ़ी होगी तो चार पीढ़ी, कम से कम सब खाना खाने के टेबल पर हम अपनी मातृभाषा में बात करेंगे। यह कर सकते हैं क्या ?

बात छोटी है लेकिन ये इसकी बहुत बड़ी ताकत है। और कभी ना कभी एक कंपीटिशन करनी चाहिए विदेश में और मैं चाहूंगा कि आप करेंगे विदेश में। हमारी बच्चियां हैं, साड़ी पहनने की कंपीटिशन। अच्छी से अच्छी साड़ी कौन पहनता है। जल्दी से जल्दी साड़ी कौन पहनता है। ईनाम दीजिए। बच्चों के लिए साफा बांधने की प्रैक्टिस। अच्छे से अच्छा साफा कैसे बांधते हैं, पगड़ी कैसे बांधते हैं। देखिए इन चीजों से लगाव पैदा होता है। कंपीटिशन का कंपीटिशन होगा, खेल का खेल होगा, लेकिन आप की नई पीढ़ी को संस्कार मिल जाएगा। और इसलिए चीजें छोटी हो, लेकिन छोटी-छोटी चीजों का, कभी भारतीय व्यंजनों का कंपीटिशन। कंपलसरी नहीं पीढ़ी ही बनाकर लाये, पुराने लोग जो हिंदुस्तान से आए, वो नहीं। जो यहां पैदा हुए, बढ़े, उनको बनाओ। चलो रोटी बनाके ले आओ। सब्जी बना के ले आओ। दाल बना, कैसे बनाते हैं।

आपको आश्चर्य होगा कि मैं ऐसी छोटी-छोटी बातें कर रहा हूं। ये कोई प्रधानमंत्री है कोई ? लेकिन मुझे मालूम है कि ये छोटी-छोटी चीजों की जो ताकत होती है, वही दुनिया बदलती है। और हमारी नई पीढ़ी को इसके लिए तैयार करना चाहिए। अगर आप इसको करेंगे तो अच्छा होगा, बाकी तो मैं इस देश का मेहमान था, भारत की बात ले के आया था, भारत की बात सुनाने आया था।

जापान की बातें सुनने समझने की कोशिश की। बहुत अच्छे निर्णय हुए। जापान के साथ बहुत अच्छे निर्णय हुए। हिंदुस्तान में ट्रिलियन शब्द शायद पहली बार चर्चा में आएगा। कानों पर मिलियन-बिलियन तो थोड़ा बहुत आने लगा है। ट्रिलियन शब्द पहली बार वहां चर्चा में आया। 3.5 ट्रिलियन येन, करीब 35 बिलियन डालर, यानी कि 2 लाख 10 हजार करोड़ रुपये, आने वाले दिनों में जापान भारत में निवेश करेगा। भारत के विकास के अंदर जुड़ेगा। ये अपने आप में बहुत बड़ा निर्णय है।

कुछ एरिया बड़े सेंसेटिव होते हैं, जो जिसको दो देशों को जरा अशंका का माहौल रहता है। हमारे देश की छह कंपनियां ऐसी थीं, जो प्रोडक्शन करती थीं, वह जापान में प्रतिबंधित थीं। जापान के साथ उस विषय से हमारा लंबे अरसे से झगड़ा चलता था। मुझे सबसे ज्यादा आनंद इस बात का है कि जापान ने हम पर भरोसा किया। भरोसा बहुत बड़ी ताकत होती है। दुनिया के संबंधों में भरोसा एक ऐसा केमिकल है जी, जो फेविकल से भी ज्यादा घनिष्ट दोस्ती बनाता है। गहरी दोस्ती बनाती है। और उस भरोसे के कारण जापान ने उन छह हमारे जो कंपनियों के उत्पादन पर जो प्रतिबंध लगाया था, उसे हटा दिया।

मैं पैदा तो गुजरात में हुआ हूं, गुजरात ने मुझे पाला-पोसा, बड़ा किया, लेकिन इन दिनों में काशी की सेवा में हूं। वाराणसी का मैं एमपी हूं। मेरा एक दायित्व भी बनता है। वाराणसी, वेद काल से भी पुरानी नगरी मानी जाती है। शायद दुनिया की सबसे पुरानी नगरी के रूप में उसका वर्णन आता है। क्योटो भी काफी पुरानी नगरी है। यहां भी हजारों मंदिर हैं। यहां पर भी उसकी आत्मा जो है, स्पिरिचुअल आत्मा जो है, उसको संभालते हुए उसका मोडर्नाइज किया। मेरे मन में रहता था कि वाराणसी में नहीं हो सकता है ऐसा ? इसलिए, इस यात्रा में मैंने कुछ समय क्योटो के लिए भी निकाला। मेरे लिए खुशी की बात है कि प्रधानमंत्री सारे प्रोटोकाल छोड़कर के क्योटो आए। मुझे सब जगह दिखाने के लिए ले गए। काफी समय मेरे साथ बिताया। हल्की-फुल्की, बहुत सी गप्पें, गोष्ठी, बातें हुईं। हल्का-फुल्का माहौल रहा। लेकिन मेरा सपना था, मैं एक वाराणसी का जन प्रतिनिधि हूं, तो वहां के लिए भी कुछ मैं करूं।

क्योटो के साथ जी हमारा जो एमओयू हुआ है, और विशेषकर के उन परंपराओं को बनाये रखते हुए, हेरीटेज को पूरी तरह संभालते हुए और क्योटो एक ऐसी सिटी है, जिसके 17 स्ट्रक्चर्स ऐसे हैं, जो वर्ल्ड हेरीटेज में हैं। एक नगर के 17 स्ट्रक्चर्स वर्ल्ड हेरीटेज में हों, दुनिया में कहीं नहीं हो सकता है। ऐसी वो नगरी है। उससे हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। क्योटो वाराणसी दोनों एज ए नगर 'हेरीटेज सिटी' में हैं। तो उसके दिशा में मैंने थोड़ा समय दिया था। मैं मानता हूं कि आने वाले दिनों में जापान के मार्गदर्शन से उस काम को हम भारत में कर पाएंगे।

मेरे हिसाब से यात्रा बहुत ही सफल रही है। बहुत ही सफल। मैं इस यात्रा को एक और रूप में भी विशेष देखता हूं। समान्य रूप के प्रमुख लोग मिलते हैं तो एक दूसरे को गिफ्ट देते हैं। आपको जानकर के खुशी होगी, मैं गिफ्ट देने के लिए गीता ले आया था, भगवद् गीता। मैं नहीं जानता हूं कि हिंदुस्तान में इस पर क्या होगा, शायद एक टीवी डिबेट चलेगी इस पर। हमारे सारे सेक्यूलर मित्र बड़ा तूफान खड़ा कर देंगे कि मोदी अपने आप को समझता क्या है। गीता लेकर गया है, मतलब उसने उसको भी कम्यूनल कर दिया है।

खैर उनकी भी तो रोजी रोटी चलनी चाहिए और अगर हम नहीं रहे तो उनकी कैसे चलेगी। लेकिन पता नहीं आज-कल ऐसे-ऐसे विषयों पर विवाद करते हैं। लेकिन, मेरा कमिटमेंट है, मेरा कन्विकशन है, मैंने निर्णय किया कि मैं दुनिया के किसी भी महापुरुष को मिलूंगा तो मैं ये दूंगा।

मैंने जापान में आज यहां के महाराजा मिलने गया तो मैंने उनको भी गीता भेंट की। क्योंकि मेरे पास इससे बढ़कर के देने को कुछ नहीं है। दुनिया के पास भी इससे बढ़ कर पाने को कुछ नहीं है। भारत और जापान की मैत्री, इसका एक विशेष रूप है। जापान के लोगों के दिलों में भारत के लिए एक विशेष स्थान है। आप लोग यहां रहते हैं, आपका तो होगा ही। लेकिन उसका कारण हमारे लोगों के कुछ विशेष व्यवहार रहे होंगे। मुझे यहां बताया गया कि जब हिरोशिमा की घटना हुई तो उसके बाद दुनिया के कई देशों के लोग मदद को यहां आए थे। सब खत्म हो चुका था। अकेले हिन्दुस्तान के जो वालेंटियर्स आए थे, वही अकेले ऐसे थे जो डेड बॉडी को अपने हाथों से उठाते थे। बाकी दुनिया से आए हुए मशीन से सारी चीजें हटाते थे। भारत के लोग हिरोशिमा के उस आपत्ति में उनके शरीर को अपने हाथों से उठाकर ले जाते थे। इस बात का उनके मन पर प्रभाव आज भी है, कि यह देश जीवित जापानी के ही नहीं, मृतक जापानी को भी उतना ही सम्मान देता है, ये शिक्षा दी थी। चीजें छोटी होती हैं, लेकिन और इसके कारण एक ऐसा इमोशनल बाइंडिंग है।

इस मैत्री को आगे बढ़ाने के पीछे एक वैश्विक परिदृश्य में बहुत अलग रूप देखता हूं। टर्मिनोलॉजिकली, मैं कोई डिप्लोमेट नहीं हूं। इसलिए मुझे इस टर्मिनोलोजी का कोई ज्ञान नहीं है कि वे लोग कैसे इसे सोचते होंगे। लेकिन मेरा जो राँ विजन है, सामान्य समझ जो मेरी है, वो मुझे कहती है। सारी दुनिया कहती है कि 21वीं सदी एशिया की होगी। इसमें कोई कंप्यूजन नहीं है। सब लोग बोलते हैं, दुनिया के टॉप मोस्ट सब लोग बोल चुके हैं कि 21वीं सदी एशिया की होगी। कोई आगे बढ़ के कहता है कि 21वीं सदी चाइना की होगी, कोई कहता है 21 वीं इंडिया की होगी। लेकिन इसमें कोई कंप्यूजन नहीं है कि 21वीं एशिया की होगी। अब 21वीं सदी एशिया की होगी, यह तो कंफर्म है, लेकिन 21वीं सदी कैसी होगी, यह अभी कंफर्म नहीं है और वो कैसी होगी, यह उस बात पर डिपेंड करता है कि भारत और जापान की मैत्री कैसी होगी। भारत और जापान मिल कर के किन वैल्यूज को प्रमोट करते हैं। विश्व को किस दिशा में ले जाने के लिए प्रयास करते हैं। उस पर 21 वीं सदी की दिशा, 21वीं सदी की दशा यह निर्भर रहने वाली है। उस अर्थ में, उस अर्थ में भारत और जापान की मैत्री का प्रभाव आने वाली पूरी शताब्दी पर रहने वाला है।

आप जब जापान में रहते हैं तो इसकी ताकत क्या है, इस ताकत को समझ करके एक नागरिक के नाते, एक भारत में प्रतिनिधि के नाते जापानियों के दिल में किस प्रकार से हमारा जुड़ाव बढ़ता चले, और इस सपने को साकार करें। मुझे विश्वास है कि भारत के गौरव को बढ़ाने में आप लोगों का बहुत-बहुत योगदान रहेगा।

दो छोटी चीजें मैं आपके सामने कहना चाहता हूं। हम इतने सालों से जापान में रहते हैं, एक संकल्प कर सकते हैं कि हमारे अपने प्रयत्न से कम से कम पांच जापानीज परिवार को हर वर्ष में हिंदुस्तान जाने के लिए, देखने के लिए प्रेरित करूंगा। कर सकते हैं क्या ? भारत सरकार जो टूरिज्म को प्रमोट नहीं कर सकती है, वह आप कर सकते हैं। आप मुझे बताइए, कितने 23000 बताए यहां, पूरे जापान में। अगर 23000 है, पूरे 5000 फैमिली हैं। 5000 फैमिली 5 परिवार को भेजे, मतलब 25000 फैमिली मतलब मोर देन 75000 टू वन लाख लोग, आपके प्रयत्न से हर वर्ष हिंदुस्तान आए, मुझे बताइए, वहां के गरीब को रोजी-रोटी मिलेगी कि नहीं मिलेगी, चाय बेचने वाले की चाय बिकेगी कि नहीं बिकेगी। आप भी चाहते हैं ना कि चाय बेचने वाले की चाय बिके।

हम एक काम कर सकते हैं, लेकिन हम करते नहीं हैं। उनको समझायें, उनको विश्वास दें। और आप चलिये, हम आपको अता पता देते हैं, इन चार जगह पर जाके आइये, अच्छा लगेगा। देखिए सिर्फ विश्व में फैले हुए भारतीय प्रतिवर्ष पांच अपने साथी मित्र परिवारों को हिंदुस्तान भेजना शुरू करें, हिंदुस्तान का टूरिज्म दुनिया में कतई पीछे नहीं रहेगा। बड़ी सरलता से करने वाला काम है।

दूसरी बात, अब तो दुनिया सारी सोशल मीडिया से जुड़ी हुई है, इंटरनेट से जुड़ी हुई है। मैंने प्रधानमंत्री कार्यालय में 'माई गोव. एमआई.जीओवी', एक इंटरैक्टिव वेबसाइट है। आप इसमें जाकर के डिटेल देखिए। आप एक ग्रुप के रूप में ज्वाइन करके भारत में क्या किया जा सकता है। बहुत कंस्ट्रक्टिव सुझाव डाइटेक्ट मुझे भेज सकते हैं। आपके मन में जो भी विचार आए लिख सकते हैं। यह एक ओपन फोरम है, बहुत ही नया कंसेप्ट है। 'माई गोवमेंट' यानी जनता कहती है, 'मेरी सरकार' है। उस मूड में उसको बनाया है। मैं चाहूंगा कि आप उसको स्टडी कीजिए। उसमें जिन विषयों को मैंने रेज किया है, आप उस पर अपना योगदान दीजिए। ये कंट्रीब्यूशन पूरे विश्व में फैले हुए अपने लोगों के द्वारा जितना कंट्रीब्यूशन मिलेगा, नए-नए आइडियाज भारत की प्रगति के लिए काम आएंगे। मैंने आपसे न येन मांगा है, न पाउंड मांगा है, न डॉलर मांगा है। उसके बावजूद भी आप देश की बहुत कुछ देश की सेवा कर सकते हैं।

इसी एक अपेक्षा के साथ आप सबको मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं। धन्यवाद।

अमित कुमार/ शिशिर चौरसिया/ तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

31-अक्टूबर-2014 13:11 IST

राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर राजपथ से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के "रन फॉर यूनिटी" भाषण का मूल पाठ

मेरे साथ आप लोग बोलेंगे, मैं कहूंगा सरदार पटेल आप लोग कहेंगे अमर रहे, अमर रहे,... सरदार पटेल, (अमर रहे) सरदार पटेल, (अमर रहे) सरदार पटेल (अमर रहे)।

मंच पर विराजमान मंत्रिपरिषद् के हमारे वरिष्ठ साथी, आदरणीय सुषमा जी, आदरणीय वेंकैया जी, श्रीमान रविशंकर जी, दिल्ली के लेफ्टिनेंट गवर्नर और सारे नौजवान साथियों

आज सरदार वल्लभ भाई पटेल की जन्म जयंती का प्रेरक पर्व है। जो देश इतिहास को भूला देता है, वह देश कभी भी इतिहास का निर्माण नहीं कर सकता है। और इसलिए एक जीवंत राष्ट्र के लिए, एक आशा-आकांक्षाओं के साथ भरे हुए राष्ट्र के लिए सपनों को सजा कर बैठी युवा पीढ़ी के लिए अपने ऐतिहासिक धरोहर सदा-सर्वदा प्रेरणा देती है और हमारे देश ने इस बात को भी कभी भी भूलना नहीं होगा कि हम इतिहास को विरासतों को अपने वैचारिक दायरे में न बांटे। इतिहास पुरुष, राष्ट्र पुरुष इतिहास की वो धरोहर हाते हैं जो आने वाली पीढ़ियों के लिए नया उमंग और नया उत्साह भरते हैं।

आज श्रीमती इंदिरा गांधी जी की भी पुण्य तिथि है। सरदार साहब का जीवन देश की एकता के लिए आहूत हो गया। बैरिस्टर के नाते, सफल बैरिस्टर गांधी के चरणों में समर्पित हो गए, और हिंदुस्तान के किसानों को आजादी के आंदोलन में जोड़कर के उन्होंने अंग्रेज सल्तनत को हिला दिया था। अंग्रेज सल्तनत ने भांप लिया था अगर देश का गांव, देश का किसान आजादी के आंदोलन का हिस्सा बन गया तो अंग्रेज सल्तनत की कोई ताकत नहीं है कि वो आजादी के दीवानों के खिलाफ लड़ाई लड़ सके।

कभी-कभी जब हम रामकृष्ण परमहंस को देखते हैं तो लगता है कि स्वामी विवेकानंद के बिना रामकृष्ण परमहंस अधूरे लगते हैं। वैसे ही जब महात्मा गांधी को देखते हैं तो लगता है कि सरदार साहब के बिना गांधी भी अधूरे लगते थे। यह एक अटूट नाता था। यह अटूट जोड़ी थी। जिस दांडी यात्रा ने हिंदुस्तान की आजादी को एक नया मोड़ दिया था। पूरे विश्व को सबसे पहले ताकतवर मैसेज देने का अवसर दांडी यात्रा में से पैदा हुआ था। उस दांडी यात्रा में एक सफल संगठक के रूप में, एक कार्यकर्ता के रूप में सरदार साहब की जो भूमिका थी, वो बेजोड़ थी। और महात्मा गांधी ने दांडी यात्रा की पूरी योजना सरदार साहब के हवाले की थी। हम कल्पना कर सकते थे कि देश की आजादी आंदोलन के अलग-अलग पड़ाव में, महात्मा गांधी के साथ रहकर के सरदार साहब की कितनी अहम भूमिका रही थी और आजादी के बाद सरदार साहब का लाभ देश को बहुत कम मिला। बहुत कम समय तक हमारे बीच रहे। लेकिन इतने कम समय में सरदार साहब ने अंग्रेजों के सारे सपनों को धूल में मिला दिया था, चूर-चूर कर दिया था। अपनी दूर दृष्टि के द्वारा, अपने कूटनीति सामर्थ्य के द्वारा, अपनी राष्ट्र भक्ति के द्वारा। अंग्रेज चाहते थे कि देश आजाद होने के बाद सैकड़ों टुकड़ों में बिखर जाए। आपस में लड़ते रहे, मर मिटते रहे, यह अंग्रेजों का इरादा था, लेकिन सरदार साहब ने अपनी कूटनीति के द्वारा, अपनी दीर्घ दृष्टि के द्वारा, अपने लोखंडित मनोबल के द्वारा साढ़े पांच सौ से भी अधिक रियासतों को एक सूत्र में बांध दिया। जिसे सम्मान देने की जरूरत थी, उसे सम्मान दिया। जिसको पुचकारने की जरूरत थी, उसको पुचकारा और जिसको आंख दिखाने की जरूरत थी उसको आंख दिखाने में भी सरदार पटेल ने कभी हिचक नहीं की, संकोच नहीं किया। उस सामर्थ्य का परिचय दिया था। और उसी महापुरुष ने, एक प्रकार से आज जब हिंदुस्तान देख रहे हैं वो एक भारत का सफलदृष्टा उसके नियंता सरदार पटेल को देश कभी भूल नहीं सकता है।

शताब्दियों पहले इतिहास में चाणक्य का उल्लेख इस बात के लिए आता है कि उन्होंने अनेक राजे-रजवाड़ों को एक करके, एक सपना लेकर के, राष्ट्र के पुनरुद्धार का सपना देकर के सफल प्रयास किया था। चाणक्य के बाद उस महान काम को करने वाले एक महापुरुष हैं, जिनका आज हम जन्म जयंती पर्व मना रहे हैं, वो सरदार वल्लभ भाई पटेल हैं। लेकिन यह कैसा दुर्भाग्य है, जिस व्यक्ति ने देश की एकता के लिए अपने आप को खपा दिया था, आलोचनाएं झेली थी, विरोध झेले थे। अपने राजनीतिक यात्रा में रूकावटें महसूस की थी। लेकिन उस लक्ष्य की पूर्ति के मार्ग से कभी विचलित नहीं हुए थे, और वो लक्ष्य था भारत की एकता। उसी देश में, उसी महापुरुष की जन्म जयंती पर, 30 साल पहले भारत की एकता को गहरी चोट पहुंचाने वाली एक भयंकर घटना ने आकार लिया। हमारे ही अपने लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। और

वो घटना किसी सम्प्रदाय के लोगों के सीने पर लगे घाव की नहीं थी, वो घटना भारत के हजारों साल के महान व्यवस्था के सीने पर लगा हुआ एक छूरा था, एक खंजर था, भयंकर आपत्तिजनक था। लेकिन दुर्भाग्य रहा इतिहास का कि उसे महापुरुष के जयंती के दिन यह हो गया। और तब जाकर के देश की एकता के लिए, हम लोगों ने अधिक जागरूकता के साथ, अधिक जिम्मेवारी के साथ। सरदार साहब ने हमें एक भारत दिया, श्रेष्ठ भारत बनाना हमारी जिम्मेवारी है। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' इस सपने को पूरा करने के लिए भारत की जो महान विरासत है वो विरासतें विविधता में एकता की है। उस विविधता में एकता की विरासत को लेकर के, जातिवाद से परे उठकर के, भाषावाद से परे उठकर के, सम्प्रदायवाद से परे उठकर के एक भारत समृद्ध भारत, ऊंच-नीच के भेदभाव से मुक्त भारत यह सपने को साकार करने के लिए आज से उत्तम पर्व नहीं हो सकता, जो हमें आने वाले दिनों के लिए प्रेरणा देता रहे।

और युवा पीढ़ी आज इस राष्ट्रीय एकता दिवस पर पूरे हिंदुस्तान में Run for Unity के लिए दौड़ रही है। मैं समझता हूं यह हमारा प्रयास एकता के मंत्र को निरंतर जगाए रखना चाहिए। और हमारे शास्त्रों में कहा है राष्ट्रयाम जाग्रयम वयम्.. हर पल हमें जागते रहना चाहिए अपने सपनों को लेकर के, सोचते रहना चाहिए, उसके अनुरूप काम करते रहना चाहिए तभी संभव होता है। भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है। अनेक विविधताओं से भरा हुआ देश है। विविधता में एकता यही हमारी विशेषता है। हम कभी एकरूपता के पक्षकार नहीं रहे। हम विविधताओं से भरे हुए रहते हैं। एक ही प्रकार के फूलों से बना गुलदस्ता और रंग-बिरंगे फूलों से बने गुलदस्ते में कितना फर्क होता है। भारत उन विशेषताओं से भरा हुआ देश है, उन विशेषताओं को बनाते हुए एकता के सूत्र को जीवंत रखना, एकता के सूत्र को बलवंत बनाना यही हम लोगों का प्रयास है और यही एकता का संदेश है।

राज्य अनेक राष्ट्र एक,
पंथ अनेक लक्ष्य एक,
बोली अनेक स्वर एक,
भाषा अनेक भाव एक,
रंग अनेक तिरंगा एक,
समाज अनेक भारत एक,
रिवाज अनेक संस्कार एक,
कार्य अनेक संकल्प एक,
राह अनेक मंजिल एक,
चेहरे अनेक मुस्कान एक,
इसी एकता के मंत्र को लेकर के यह देश आगे बढ़े।

धीरज सिंह / तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

30-नवंबर-2014 23:32 IST

संगई फेस्टिवल के समापन समारोह पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

अभी मुख्यमंत्री जी बहुत सारे विषयों की चर्चा कर रहे थे। रोड नहीं हैं, अस्पताल नहीं हैं, फिल्म डिवीज़न का कुछ नहीं है। ये जब सारी बातें बता रहे थे, तो मुझे मन में बड़ा संतोष हो रहा था कि कम से कम इस मुख्यमंत्री को भरोसा है कि ये सरकार तो कुछ करेगी। और अगर मुख्यमंत्री का मुझ पर इतना भरोसा हो तो फिर मेरा भी मन करता है कि कुछ करना चाहिए।

इन्होंने जो पोरबंदर सिल्वर रोड की बात कही। जब अटल जी की सरकार थी तो पोरबंदर में उस रोड के प्रारंभ का शिलान्यास मैंने ही किया था, मुख्यमंत्री के नाते। हो सकता है वैसा उद्घाटन करने के लिए मुझे ही यहां आना पड़ेगा। लेकिन, जितनी बातें मुख्यमंत्री जी ने बताई हैं, बहुत महत्वपूर्ण हैं और हम भी चाहते हैं कि पूरा North East ये हमारा अष्टलक्ष्मी का प्रदेश, विकास की नई ऊंचाईयों को पार करे और इसलिए इस बजट में North East के करीब 60,000 करोड़ रुपए से ज्यादा बजट, इस बजट में हमने रखा था क्योंकि हम चाहते हैं कि यहां infrastructure पर बल दें।

अभी मैं म्यांमार गया तो म्यांमार में जो हमारी bilateral बातचीत हुई, वहां की सरकार के साथ, उसमें अधिकतम चर्चा, इंफाल के साथ कैसे जुड़ना, उसी की हुई है। रोड connectivity हो, air connectivity हो, i-ways का लाभ मिले और म्यांमार सरकार भी सकारात्मक रूप से भारत के साथ infrastructure के काम में, इस इलाके के साथ जुड़ने में बहुत महत्वपूर्ण निर्णय किए हैं। आने वाले दिनों में इसका परिणाम आपको ज़रूर नज़र आएगा।

आज संगई festival में मुझे आने का इधर सौभाग्य मिला। हमारे देश में tourism के विकास के लिए बहुत संभावना है। विश्व के अंदर किसी देश में कोई tourist जाए और पूरा उस देश में उसको जितना देखने को मिले, जानने को मिले, उससे ज्यादा tourist को हमारे यहां एक एक state में मिल सकता है। एक राज्य में ही महीने भर वो चीज़ें देख सकता है, गुन सकता, जान सकता है। और हर राज्य की विशेषता अलग है। यानी कभी-कभी एक tourist अगर हर वर्ष यहां आता है और हर वर्ष एक महीना बिताता है, तो भी एक जनम के अंदर पूरा हिंदुस्तान नहीं देख पाएगा, इतनी विविधताओं से भरा ये हमारा देश है।

North-East में tourism की बहुत संभावनाएं हैं, मणिपुर में अनेक संभावनाएं हैं। अभी मुख्यमंत्री जी ने याद कराया था पोरबंदर और मैं गुजरात का हूं, याद कराया था। तो गुजरात में द्वारका भी है। जहां द्वारका है वहां कृष्ण हैं। और जहां मणिपुर है, वहां भी कृष्ण हैं। अभी मैंने कृष्ण को जिस रूप में यहां देखा, तो मैं उसी माहौल में पैदा हुआ, पला-बढ़ा हूं तो मुझे तो मणिपुर अपनापन सा महसूस होता है।

दुनिया में 3 ट्रिलियन डालर की tourism business की संभावना नज़र आ रही है। दुनिया में सबसे तेज़ गति से अगर किसी क्षेत्र का विकास हो रहा है, तो tourism का हो रहा है। कुछ स्थानों पर 40 परसेंट ग्रोथ है tourism की। भारत के पास दुनिया को देने के लिए बहुत कुछ है, दिखाने के लिए बहुत कुछ है, उसको प्रभावित करने के लिए बहुत कुछ है, प्रेरित करने के लिए बहुत कुछ है। लेकिन ये सारा हमारा क्षेत्र untapped पड़ा हुआ है। हमारी कोशिश है कि भारत की जो विरासत है, विरासत के माध्यम से हम दुनिया को tourism के क्षेत्र में आकर्षित करें।

अब मणिपुर, जिसने पोलो को जन्म दिया! कल आपका यहां पोलो का कार्यक्रम था, मैंने सुना यहां 8 देश के लोग उसमें थे। अब ये, ये आपकी विरासत है। ये दुनिया को कैसे पता चले, दुनिया उसे देखने कैसे आए? ये खेल यहाँ प्रारंभ हुआ, वो क्या था, दुनिया जाने तो! इसलिए मणिपुर का जो सामर्थ्य है, उस सामर्थ्य को देश भी जाने, दुनिया भी जाने। और उसमें मैं आपके साथ कंधे से कंधा मिला करके काम करना चाहता हूं।

मुझे अभी यहाँ के एचआरडी के विभाग के लोग मिले थे, तो मैंने उनसे कहा कि हिंदुस्तान में इतनी universities हैं, क्या हर university से साल में एक बार सौ नौजवान, ज्यादा नहीं कह रहा, सौ नौजवान North East में tourist के नाते जा सकते हैं क्या? आप कल्पना कर सकते हैं कि अगर हिंदुस्तान की एक university के सौ युवक अगर यहां पर tourist के

नाते आएँ, North East के इन इलाकों में जाएँ, सिर्फ university के स्टूडेंट के कारण यहां का tourism इतना बढ़ सकता है कि जिसकी आप कल्पना नहीं कर सकते।

उन्होंने इस दिशा में काम शुरू किया है, आने वाले दिनों में नज़र आएगा। यहां पर विविधता इतनी है और मणिपुर तो एक प्रकार से पूरे North East की सांस्कृतिक राजधानी के जैसा है ये प्रदेश। क्या नहीं है आपके पास! नृत्य है, नाट्य है, गीत है, संगीत है, कास्ट्यूम हैं, क्या नहीं है! यानी एक प्रकार से कला की अप्रतिम विरासत की यह धरती है। उस धरती को दुनिया देखे। मेरा आज इस संगई festival से जुड़ने के पीछे, देश को मुझे एक संदेश देना है, कि एक जगह है जहां प्रधानमंत्री जाने को लालयित है, आप भी जाइए।

कभी-कभी लोग सोचते हैं कि infrastructure होगा तो tourist आएंगे। कोई कहता है कि tourist आएंगे तो infrastructure होगा। दानों बातों में वजन है। लोग आना शुरू करेंगे तो व्यवस्थाएँ विकसित होने लगेंगी। व्यवस्थाएँ विकसित होने लगेंगी, तो लोग आने वाले बढ़ते जाएंगे। और धीरे-धीरे समाज के अंदर अपनेआप एक ताकत होती है वो progressively इन चीज़ों का develop करते हैं, हमने थोड़ा बस friendly environment create करना होता है।

अगर उचित connectivity मिल जाए तो यहां टूरिस्टों का तांता लग रहेगा। मुझे विश्वास है कि tourism ऐसा क्षेत्र है जो कम से कम पूंजी से ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोज़गार देता है। बहुत पूंजी नहीं लगानी पड़ती। Tourism ऐसा है- चना-सेव बेचने वाला भी कमाता है, पापड़ बेचने वाला भी कमाता है, आर्टो रिकशा वाला भी कमाएगा, फूल पौधे बेचने वाला भी कमाएगा, सब्जी बेचने वाला भी कमाएगा, टैक्सी वाला भी कमाएगा, छोटे-छोटे guest-house लेकर के बैठे होंगे वो भी कमाएंगे, home stay की जो व्यवस्था करते होंगे वो भी कमाएंगे, चाय वाला भी कमाएगा। चाय वाला कमाए तो मुझे जरा ज्यादा आनंद होता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि गरीब से गरीब को रोज़गार मिलता है। भारत सरकार ने तय किया है, मणिपुर की ताकत का परिचय करते हुए, हमने निर्णय किया है कि मणिपुर में sports university बनेगी। एक प्रकार से विश्व में खेल-कूद की दुनिया में भारत का नाम कमाने में मणिपुर का बहुत बड़ा योगदान है। मणिपुर के पास ये जो ताकत है, उस ताकत के लिए भारत सरकार जो भी कर सकती है करना चाहती है। क्योंकि यहां inherent यहां के डीएनए में खेल कूद है। मणिपुर में sports है, इतना ही नहीं, मणिपुर में sportsmen spirit भी उतना ही ज्यादा है। पूरे मणिपुर में sportsmen spirit है। और इसलिए, यह पूरे भारत के लिए प्रेरणा बने, ये हमारा प्रयास है।

कुछ लोगों के दिमाग में ये सोच होती है कि sports university बनती है, मतलब कि अच्छे खिलाड़ी तैयार होते हैं। ऐसा नहीं है। Sports एक बहुत बड़ी economy है। मैदान तैयार करने से लेकर, score board लिखने वाले लोग, उसके data collection करने वाले लोग, food habits की चिंता करने वाले लोग, physiotherapy की चिंता करने वाले लोग, sports के आवश्यक costume बनाने वाले लोग, यानी खेल-खिलाड़ी के पीछे हजारों प्रकार के अलग व्यवसाय होते हैं। मुझे मणिपुर के नौजवान - जो खुद शायद खिलाड़ी नहीं बन पाए होंगे, लेकिन वो खेल की दुनिया में पले-बढ़े इसलिए sports university में उनकी प्रोपर ट्रेनिंग से वे कहीं umpire बन सकते हैं, कहीं scorer बन सकते हैं, कहीं बढ़िया sportsman के physiotherapist बन सकते हैं, कहीं बढ़िया sportsman के dietitian बन सकते हैं, मैदानों की रचना करने वाले बन सकते हैं, मैदान के आर्किटेक्ट बन सकते हैं। एक प्रकार से सर्वांगीण विकास की संभावनाएं स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी के साथ जुड़ी हुई हैं। वरना कुछ लोगों को लगता है, sports university यानी कि अच्छा चलो यहां खिलाड़ियों की ट्रेनिंग होगी। ऐसा नहीं है। एक पूरा विज्ञान है। एक पूरा अर्थशास्त्र है। एक पूरी रचना - और उसमें technology है, arithmetic है, सब चीज़ है। आप कल्पना कर सकते हैं कि मणिपुर के जीवन में एक university कितना बड़ा बदलाव लाएगी।

मैं अभी आस्ट्रेलिया गया था, मैंने आस्ट्रेलिया से कहा है कि हमारे मणिपुर में हम जो sports university बना रहे हैं, आस्ट्रेलिया हमारे साथ जुड़े। दुनिया के देशों को मैं यहां जोड़ना चाहता हूँ, और उसका लाभ आने वाले दिनों में मिलेगा।

मणिपुर में यहां के नौजवान को रोज़गार चाहिए और रोज़गार के लिए skill development का महात्म्य होना चाहिए। अगर skill development होता है तो उसको अपने आप रोज़गार मिल जाता है। हम skill development पर बल देना चाहते हैं। मैं अभी IT professional से मिला था। मैंने उनको कहा कि आपके call center वगैरह हैदराबाद और बेंगलूर में क्यों चलाते हो? ये मणिपुर में भी चल सकता है, ये नागालैंड में चल सकता है, मेघालय में, मिजोरम में चल सकता है। यहां तो मौसम ऐसा है, कि एयरकंडीशन की भी ज़रूरत नहीं पड़ेगी और यहां के बच्चे English speaking हैं सब, अंग्रेज़ी भाषा जानते हैं। कम से कम खर्च से आप दुनिया के अंदर बढ़िया से बढ़िया call center यहां खड़े कर सकते हो। मैं इसके पीछे लगा हूँ, दोस्तों! मैं देखूंगा, किसी न किसी को यहां खींच लाऊंगा। इसके कारण यहां के नौजवानों के लिए रोज़गार की संभावनाएं बहुत बढ़ेंगी, उसको मणिपुर छोड़कर जाना नहीं पड़ेगा।

मैंने एक ये भी सोचा है कि दिल्ली पुलिस में विशेष रूप से North East के बच्चों को पुलिस के रूप में भर्ती किया जाए, उनको अवसर दिया जाए। देश की राजधानी में North East के बच्चे पुलिसिंग करते हों तो पूरी दुनिया को पता चले कि North East के नौजवान हमारी पूरी दिल्ली को कैसे संभालते हैं, उस दिशा में मैं काम करना चाहता हूँ।

मैं जब गुजरात में मुख्यमंत्री था तो इच्छा थी मेरी, जो अधूरी रह गई। अब शायद मैं फिर से कोशिश करूंगा, पूरी हो जाए। मैंने एक इच्छा व्यक्त की थी कि North East के सभी मुख्यमंत्रियों के सामने, जब मैं मुख्यमंत्री था। मैंने कहा था कि North East के हर राज्य से 200 women पुलिस, सब states से 200 women पुलिस, 8 state हैं तो 1600 women पुलिस, दो साल के लिए मैंने कहा, गुजरात में मुझे दीजिए और हर दो साल नई बैच देते रहिए। यानी एक प्रकार से यहां की 1600 बच्चियां दो-दो साल के लिए वहां आए, पुलिस में काम करें। आप बताइए, कितना बड़ा national integration होगा।

मैंने ये भी कहा था उस समय कि "Gujaratis are the best tourists". आप दुनिया में कहीं पर भी जाओ, 'केम छो' मिल ही जाएगा। वो ऐसे ही इधर-उधर दुनिया भर में घूमते रहते हैं। पैसे बहुत हैं, खर्च करते रहते हैं। मैंने कहा, ये 1600 बच्चियां गुजरात में पुलिस से नाते रहेंगी, दो साल तो उसको 15-20 परिवारों से तो परिचय हो ही जाएगा। और पक्का! वो 15-20 परिवार यहां पर टूरिस्ट के नाते आएंगे। क्या इन सब चीजों को बढ़ावा दिया जा सकता है? मैंने गुजरात के मुख्यमंत्री को कहा है कि मेरा ये प्रस्ताव है कि अगर अभी भी North East से लोग आना चाहते हैं तो गुजरात इनको सलामी के लिए तैयार है। आप कल्पना करिए, कितना बड़ा परिवर्तन आएगा। एक समृद्ध राज्य के साथ, यहां के लोग जुड़ें, कितना परिवर्तन आएगा।

इसलिए मणिपुर के मेरे भाईयों बहनों! ये संगई समारोह के समापन पर मुख्यमंत्री जी ने जितने विषय रखे हैं, और स्वाभाविक हैं, मुझ पर भरोसा करके रखे हैं, तो मैं इस भरोसे को निभाने का पूरी तरह प्रयास करने वाले इंसानों में से हूँ। उन्होंने जितनी बातें रखी हैं, मैं वहां जा करके डिपार्टमेंट को कहूंगा कि "जरा देखिये क्या है इसमें, क्या हो सकता है।" उसी प्रकार, और जो बातें मैंने बताई हैं, उनको पूरा करने का मेरा प्रयास रहेगा, और मैं चाहूंगा, मणिपुर ने खेल के मैदान में जिस प्रकार से हिंदुस्तान का नाम रौशन किया है, वो विकास के क्षेत्र में भी हिंदुस्तान का सिरमौर बने।

एक बात की चिंता मुझे सता रही है। वो चिंता मैं व्यक्त करना चाहता हूँ। जब मैं सुनता हूँ कि मणिपुर का नवयुवा, ड्रग्स का शिकार हुआ है, ये बात मुझे बहुत पीड़ा देती है। उन मां-बापों के प्रति मुझे मन में भारी संवेदना है। ये हम सब का दायित्व है कि हमारी आने वाली पीढ़ी को हम बरबाद न होने दें। हमारे युवकों को तबाह न होने दें। ये रास्ता खतरनाक है। कोई इंसान बरबाद होता है, ऐसा नहीं है, पूरा परिवार तबाह हो जाता है, पूरा परिवार तबाह होता है, ऐसा नहीं है, पूरा समाज और राज्य तबाह हो जाता है।

इसलिए हम एक सामूहिक जिम्मेवारी उठाएं। ये मणिपुर, जहां भगवान कृष्ण की धरती रही है, जहां कृष्ण की लीला होती है, मणिपुर, जहां हिंदुस्तान को उत्तम से उत्तम खिलाड़ी मिलते हैं, उस मणिपुर में ये बिमारी नहीं होनी चाहिए। ये बिमारी से मणिपुर मुक्त होना चाहिए। यहां का नौजवान मुक्त होना चाहिए। भारत के नाम को अब रौशन करने की ताकत मणिपुर के नौजवान में है। ड्रग्स उसको तबाह कर जाएगा और इसलिए मैं आज जब संगई जैसे एक पवित्र माहौल में आया हूँ तब मैं मणिपुर के युवकों से आग्रह कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ, इस आदत में फंसे हुए लोगों को निकलना मुश्किल है, लेकिन एक बार फैसला कीजिए, निकल जाओगे दोस्तों! एक बार अपने आपको बचा लीजिए, आपका और आपके परिवार का भला हो जाएगा।

इतनी अपेक्षा के साथ, मैं फिर एक बार, मणिपुर में मुझे आने का अवसर मिला, आप सबने मेरा स्वागत किया, सम्मान किया, मैं आप सबका बहुत बहुत आभारी हूँ। धन्यवाद।

महिमा वशिष्ट / रजनी त्यागी

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

16-नवंबर-2014 16:53 IST

ब्रिसबेन के रोमा स्ट्रीट पार्कलैण्ड में महात्मा गाँधी की प्रतिमा के अनावरण हेतु हुए कार्यक्रम में, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गये भाषण का मूल पाठ

उपस्थित सभी महानुभाव,

अभी दो घंटे पहले G -20 का समापन हुआ और अब मेरा विधिवत ऑस्ट्रेलिया के साथ Bilateral मीटिंग का कार्यक्रम शुरू हुआ और प्रारंभ पूज्य बापू के Statue के अनावरण के साथ-साथ उनको नमन कर करके हो रहा है। यह मेरे लिए बहुत सौभाग्य की बात है।

मैं, इसके जो traditional owner है इस धरती के, उनको विशेष रूप से अभिनंदन करता हूँ। इस कार्य के लिए और मैं आभार भी व्यक्त करता हूँ। मैं ब्रिसबेन के मेयर का भी बहुत आभार व्यक्त करता हूँ कि इस काम के लिए उन्होंने हमें सहयोग दिया और हर भारतीय की भावना का आदर किया। इसके लिए मैं उनका भी आभार व्यक्त करता हूँ।

इन दिनों भारत में मेरे विषय को लेकर के एक चर्चा चलती है और मैं भी सुनकर के कभी-कभी हैरान होता हूँ। कुछ लोग यह कहते हैं कि मोदी प्रधानमंत्री बनने के बाद बार-बार गांधी का नाम लेते हैं और हर चीज में गांधी को लाते हैं। लेकिन आज हेमंत भाई ने जो घटना सुनाई उसके बाद मैं समझता हूँ इस प्रकार की चर्चा करने वालों को जवाब मिला होगा कि जब मैं मुख्यमंत्री भी नहीं था और ब्रिसबेन भी जाता हूँ, तब भी यहां के लोगों से गांधी की बात करता हूँ। मेरा यह Commitment है मेरा यह समर्पण है, यह मेरा उनके प्रति श्रद्धा के भाव की अभिव्यक्ति है।

हमारे शर्मा जी का परिवार यहां बैठा है। उस समय जो मुझे, मेरी खातिरदारी करते थे, जब मैं यहां आया। पुराने लोगों को मैं देख रहा हूँ। काफी परिचित चेहरे मुझे नजर आ रहे हैं, लेकिन बड़े लम्बे अरसे के बाद आज मेरा आप सब के बीच आना हुआ है। लेकिन एक अच्छे अवसर पर मुझे आने का सौभाग्य मिला है।

2 अक्टूबर को पोरबंदर की धरती पर किसी इंसान का जन्म नहीं हुआ था बल्कि 2 अक्टूबर को पोरबंदर की धरती पर एक युग का जन्म हुआ था। और मैं मानता हूँ कि महात्मा गांधी आज भी दुनिया के लिए उतने ही relevant हैं, जितने कि वे अपने जीवनकाल में थे।

आज विश्व दो बड़े संकटों से गुजर रहा है और पूरे विश्व को उसकी चिंता है, चर्चा है। हमारी जी-20 Summit में भी इन दोनों बातों की चर्चा में काफी समय भी गया है और हमें उन दो बातों का जवाब महात्मा गांधी के जीवन में से मिलता है। महात्मा गांधी के जीवन की बातों को अगर हम देखेंगे, तो आज विश्व जिन समस्याओं से जूझ रहा है। उसका जवाब ढूंढने में हमें कोई दिक्कत नहीं होगी। आज दुनिया को एक चिंता है Global Warming की और दुनिया को दूसरी चिंता है Terrorism की, आतंकवाद की।

Global Warming के मूल में मनुष्य की जो प्रकृति का शोषण करने का स्वभाव रहा। सदियों से हमने प्रकृति का शोषण किया, प्रकृति का विनाश किया और उसी ने आज ग्लोबल वार्मिंग का हमारे लिए संकट पैदा किया है। महात्मा गांधी हमेशा प्रकृतिसे प्रेम करने का संदेश देते थे। उनकी पूरी जीवनचर्या में Exploitation of the nature, उसका विरोध करते थे। मनुष्य को एक सीमा तक ही milking of the nature का ही अधिकार है। उससे ज्यादा प्रकृति से लेने का अधिकार नहीं है। यह बात महात्मा गांधी जी ने जीवन में करके दिखाई थी।

अगर हमने प्रकृति का शोषण न किया होता, मनुष्य की आवश्यकता के अनुसार बस milking of nature किया होता, तो आज जो पूरे विश्व को जिस प्रकार के संकटों को झेलना पड़ रहा है, शायद हमें जूझना न पड़ता।

महात्मा गांधी जब 25 के कालखंड में, 20- 25 के कालखंड में, 1925- 1930 में साबरमती आश्रम में रहते थे। 1930 में दांडी यात्रा के लिए वो चल पड़े थे, उसके बाद वापस कभी साबरमती आश्रम नहीं आए थे और साबरमती नदी के किनारे पर

रहते थे। उस समय साबरमती नदी लबालब पानी से भारी हुई रहती थी।

1920-25 के कालखंड में पानी की कोई कमी नहीं थी लेकिन उस समय भी अगर गांधी को पानी कोई देता था और ज्यादा पानी देता था तो गांधी उसको डांटते थे कि पानी क्यों बरबाद कर रहे हो, पानी आधा गिलास दो जरूरत पड़ी तो कोई दूसरी बार मांगेगा। गांधी इतने आग्रही रहते थे। अपने पास आए हुए लिफाफे के पीछे वो लिखते थे, क्योंकि उनको मालूम था कि मैं ज्यादा कागज उपयोग करूंगा, तो ज्यादा वृक्ष कटेंगे और तब जाकर के कागज बनेगा और वो भी मैं नहीं करूंगा। यहां तक उनका आग्रह रहता था। हम कल्पना कर सकते हैं गांधी के जीवन की हर बात में कि वो प्रकृति की रक्षा के संबंध में कितने सजग थे और अपने जीवन आचरण के माध्यम से प्रकृति की रक्षा का संदेश कितना देते थे और वही जीवन अगर हम जीते या आज भी अगर उस जीवन को हम स्वीकार करें तो हम Global Warming की दुनिया की जो चिंता है, उस दुनिया को बचाने में हमारी तरफ से भी कुछ न कुछ योगदान दे सकते हैं।

महात्मा गांधी ने हमें अहिंसा का मार्ग सिखाया, यह अहिंसा का शस्त्र, यह सिर्फ अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ने का साधन था, ऐसा नहीं है। अहिंसा, यह Article of faith महात्मा गांधी का यह विश्वास था कि हम शब्द से भी किसी की हिंसा नहीं कर सकते। शस्त्र से तो हिंसा की बात बहुत दूर की है और अगर आज विश्व ने गांधी के उस अहिंसा के संदेश को पचाया होता, समझने की कोशिश की होती; "Holier-than-thou" मैं तुमसे बड़ा हूं; मैं तुमसे से ताकतवर हूं; मैं तुमसे अच्छा हूं; मेरा रास्ता ही से सही है इस प्रकार के जो विवादों के अंदर जो दुनिया फंसी हुई है और जिसको अपनी बात को सिद्ध करने के लिए शस्त्र का सहारा लिया जा रहा है और निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतार दिया जा रहा है; महात्मा गांधी का संदेश उस रास्ते से हमें भटकने से बचा सकता था।

आज भी विश्व के लिए सबके प्रति आदर का भाव, सबके प्रति समानता का भाव, यही हमें विश्व से बचने का रास्ता हो सकता है। कोई किसी से बड़ा है और इसलिए अगर मैं उसको चुनौती दूं, उसको खत्म करूं। यह रास्ता विश्व को मंजूर नहीं है। जगत बदल चुका है। और महात्मा गांधी ने जो सपना देखा था उस सपने की ताकत कितनी है वो आज दुनिया को समझ में आना शुरू हुआ है।

मैं विशेष रूप से उन परिवारों का भी आभार व्यक्त करता हूं। जब मैं आया और ऐसी बातों की और उस पर वो लगे रहे। हेमंत और उनके सारे दोस्तों से मैं पूछ रहा था कि हेमंत, तुम्हारे बाल कहां चले गए तो कल्पना ने मुझे कहा कि मैं तो उसको ठीक खिला रही हूं। आपके दोस्त को मैं खिला रही हूं आप चिंता मत कीजिए। ऐसा एक पारिवारिक वातावरण इतने पुराने साथियों बातों-बातों में मन से जो बात निकली मैंने भी कभी सोचा नहीं था कि ये लोग यह काम तो करेंगे ही, लेकिन वो सौभाग्य मेरे नसीब में होगा, शायद कोई ईश्वरीय संकेत है कि इस काम के लिए मुझे अवसर मिला।

जो लोग बाहर हैं, यहां पहुंच नहीं पाएं हैं, उनका भी मैं सम्मान पूर्वक आदर करता हूं। और उनका गौरव करता हूं आप सबका भी मैं आभार व्यक्त करता हूं। फिर एक बार मैं सबका अभिनंदन करता हूं। यह महान काम करने के लिए बहुत बहुत धन्यावाद और पूज्य बापू को हम सब प्रणाम करते हुए उनसे प्रेरणा लेकर के मानवजाति के कल्याण के लिए जो कुछ भी कर सकते हैं करने का हम प्रयास करें। बहुत बहुत शुभकामनाएं।

अमित कुमार/ हरीश जैन/ तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

09-नवंबर-2014 13:29 IST

माननीय एकनाथ रानाडे जन्म शती पर्व के उद्घाटन समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिये गए भाषण का मूल पाठ

सभी पूज्य संतगण, मंच पर विराजमान सभी वरिष्ठ महानुभावों और एकनाथ जी की प्रेरणा से जीवन में कुछ न कुछ करने की जिन्होंने ठान के रखी है, और करते रहते हैं, ऐसे सभी उपस्थित वरिष्ठ महानुभावों

मेरे लिए बहुत सौभाग्य का यह अवसर है कि जिस महापुरुष को बचपन में हमारे लिए प्रेरणा के रूप में देखते थे, जिनके साथ छोटी आयु में कार्य करने का सौभाग्य मिला था, जिनकी सोच, हर पल कुछ न कुछ नया सिखाकर के जाती थी, ऐसे महापुरुष की शताब्दी पर्व के उद्घाटन समारोह में, उन्हें प्रणाम करने के लिए आने का, श्रद्धाभाव अभिव्यक्त करने का अवसर, उन्हीं के चरणों में जिसने अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय बिताया था, उस व्यक्ति को मिले, वो कितने बड़े गर्व की बात होती है, आप अंदाज कर सकते हैं। यहां पर बहुत लोग होंगे जिनका एकनाथ जी के साथ स्वाभाविक संपर्क आया होगा। मेरा भी एकनाथ जी के ही निकट संपर्क रहा और मैंने हमेशा पाया कि वो Perfection के संबंध में इतना अग्रणी रहते थे कि कभी-कभी उनके साथ काम करने वालों को भी अपने आपको उस Level पर ले जाने में बहुत कठिनाई महसूस करनी पड़ती थी।

जब विवेकानंद रॉक मेमोरियल पर, स्वामी विवेकानंद जी की प्रतिमा कैसी हो, उस पर निर्णय हो रहा था, और उन चर्चाओं को मैंने भी सुना था। विवेकानंद जी की आंख किस तरफ देखे, और उस आंख से क्या दर्शन हो, इतनी बारीकी से, वे शिल्पकारों के साथ, चित्र बनाने वालों के साथ चर्चा करते थे। जब शिला स्मारक बन रहा है, तो सामुद्रिक हवा उसका अपना एक स्वभाव रहता है। उन पत्थरों का चयन किया जाए ताकि सदियों तक समुद्रिक जो Salt तथा Arid air जो रहती है उससे उनको कोई खरोंच न आए, उन पत्थरों का Selection कैसे करें। बनाने के बाद भी उनको लगा कि नई-नई आधुनिक टेक्नोलॉजी का कैसे उपयोग किया जाए, तो वो कौन सा केमीकल हो सकता है जिसको कुछ वर्षों के बाद अगर उसको लगा लिया जाए, तो इसे सुरक्षित रखा जा सकता है। जबकि ये उनके विषय नहीं थे। न ही वे इंजीनियर थे, न ही वे आर्चिटेक्ट थे, लेकिन यह उनकी विशेषता थी कि जो भी करें स्थायी भाव से करें और जो भी करें भविष्य को ध्यान में रखकर करें, जो भी करें सहज-सरल-उपयोगी हो। उन बातों को लेकर वो हमेशा यह योजना करते थे। और ये विचार उनके मन में आना कि कोई काम करें जन भागीदारी से करें, शायद हिन्दुस्तान में यह पहला initiative था जिसमें जन भागीदारी का इतना व्यापक आयोजन था और समर्थन था।

हिन्दुस्तान के 40 साल से ऊपर के किसी भी व्यक्ति के पूछो तो बहुत एक लोग ऐसा बताएंगे कि हां भई मैं भी उस समय, विवेकानंद रॉक मेमोरियल बनाने के लिए एक रुपया मैंने भी दिया था।

इस देश के 40 वर्ष से ऊपर के उमर के लोग आज भी स्वामी विवेकानंद का वह रॉक मेमोरियल देखेंगे, तो वहां जाकर उन्हें लगता है कि हां भई इसमें मैं भी हूं, इसमें मेरा भी योगदान है।

हिन्दुस्तान के हर कोने में यह भाव जगाना कि शिला स्मारक भले की कन्याकुमारी के समुद्री छोरों के बीच क्यों न हो, लेकिन मैं चाहे नार्थ-ईस्ट हूं, चाहे मैं पश्चिमी भारत में हूं चाहे मैं उत्तरी भारत में हूं या विश्व के किसी भी कोने के रह रहा हूं, लेकिन इस काम में मेरा भी योगदान है, मैं भी जुड़ा हूं यह संस्कार की इमोशनल अटेचमेंट, सिर्फ रुपयों का काम होता तो 40 -50 लोगों से डोनेशन ले सकते थे।

उनका दूसरा कौशल्य देखिए। इस देश में उस काल खंड में जो राजनीतिक माहौल था वो एक राज्य के काम को और उसको अनुमोदन करने का, सराहना करने वाले नेचर का वातावरण नहीं था। एक प्रकार से उस समय का जो राजनीतिक establishment था, इस प्रवृत्ति को राजनीतिक विरोधी खेमे के रूप में देखते थे। वैसा माहौल था, लेकिन एकनाथ जी ने हिन्दुस्तान का कोई मुख्यमंत्री ऐसा नहीं होगा, कोई गवर्नर ऐसा नहीं होगा, केन्द्र को ऐसा कोई मंत्री नहीं होगा जिसके यहां जाकर करके दरवाजे पर दस्तक न दी हो। एक एक के पास खुद गये शिलास्मारक की योजना बनाई और शायद हिन्दुस्तान का कोई राज्य ऐसा होगा जिस सरकार ने, सरकार की तरफ से इसमें डोनेशन देकर करके हिस्सेदारी न की हो। ये काम

छोटा नहीं है यानि अगर उम्दा उद्देश्यों को लेकर चलें, तो किसी भी राजनीतिक विचारधारा से प्रभावित लोगों को भी अच्छे काम के लिए जोड़ा जा सकता है और इसलिए एकनाथ जी के हर कार्य के मूल बिन्दू में एक भाव रहता है था जोड़ना। हर प्रकार की चीज को जोड़ना। वे भूतकाल को भविष्य के साथ जोड़ने में लगे रहते थे। वे विपरीत विचारधाराओं को भी जोड़ने में भी लगे रहते थे। उनके इस व्यक्तित्व के कारण 1975 में जब आपात आपातकाल आया, संघ परिवार के लोग लोकतंत्र में विश्वास करने वाले लोग सारे जेल में थे, लेकिन एकनाथ जी उस समय शासन में बैठे हुए लोगों के लिए भी, बातचीत करने का एक अच्छा माध्यम बने हुए थे। यह बात शायद उतनी प्रकट नहीं हुई है।

जिस प्रकार से विनोबा जी भावे उस समय आपातकाल में, श्रीमती इंदिरा गांधी के लिए एक जगह बने थे, वहां जाते थे, विनोबा जी का उनको थोड़ा एकाध वाक्य उनके काम में भी आ गया था। लेकिन एकनाथ जी रानाडे पूरी स्थितियों में से बाहर कैसे निकला जाए, किन-किन लोगों से विचार-विमर्श किया जाए, शासन में बैठे हुए लोगों को एकनाथ जी पर भरोसा था कि इनसे बात की जा सकती है। एक महत्वपूर्ण भूमिका, क्योंकि उन दिनों में मैं उनके साथ रहा था, मैंने उनके इस कार्य को निकटता से देखा था। क्योंकि सबको लगता था कि एकनाथ जी को कभी अरेस्ट कर लेंगे और एकनाथ जी को भी जेल में डाल देंगे। लेकिन उनके इस व्यक्तित्व के कारण वे एक प्रकार से उन दिनों में, माहौल और ज्यादा न बिगड़े, समस्या के समाधान के रास्ते खोजे जाएं। इसमें अहम भूमिका एकनाथ जी रानाडे ने निभाई थी। लेकिन वे स्वयं प्रचार प्रसिद्धि से दूर रहते थे, अपने काम में डूबे रहते थे इसलिए इन बातों को कभी उनकी तरफ से उजागर नहीं किया गया।

व्यक्ति की पहचान और व्यक्ति की खोज, यह उनकी विशेषता रहती थी। एक बार, उन्होंने कहा कि मैं फलाने फलाने ट्रेन से आ रहा हूं तुम रेलवे स्टेशन पर आ जाओ और वहीं स्टेशन पर नजदीक में स्नान-वान करके मेरे साथ माउंट आबू को चलो। मैं, मालूम नहीं था क्या काम है कैसा है अब मैंने देखा कि उनको कोई रिजर्वेशन नहीं था। तो उस समय शायद थर्ड क्लास रहता था। तो ऐसे ही शायद बैठकर आए होंगे। बड़े थके हुए नजर आ रहे थे। मैंने कहा सर थोड़ा आराम कीजिए। नहीं, नहीं बोले आबू पहुंचना है तो चलो मेरे साथ। वहीं स्टेशन के पास एक जगह स्नान-वान हो गया और हम चल दिए। रास्ते में उनसे मैंने पूछा कि क्या है, कि आप एकदम से निकले हो। तो रामकृष्ण मिशन के एक स्वामी जी जो रामकृष्ण मिशन अलग होकर करके आबू में रह करके साधना वगैरह करते थे, एक अलग से जीवन व्यतीत करते थे, वो उनको मिलना चाहते थे। हम गये और मैंने देखा कि जिस श्रद्धा से उनको प्रणाम किया.. हम तो एक स्वयंसेवक के रूप में उनके पास थे, तो कोई रोल ही नहीं था, चीजों को देखने का आब्जर्व करने का अवसर मिला। वो उनको आग्रह करने लगे कि ठीक है अब आप रामकृष्ण मिशन की व्यवस्था से बाहर हुए हैं, अलग से काम कर रहे हैं, लेकिन इतना बड़ा काम है, आप विवेकानंद शिला स्मारक की व्यवस्था से जुड़िए और आपकी जो तपस्या है वह देश के नौजवानों को प्रेरणा दे, इसके लिए काम कीजिए। यानि कि , माउंट आबू में बैठे हुए एक इंसान को अपने काम से जोड़ने के लिए इतना परिश्रम उठाकर आना और तीन दिन रुककर करके हर आधे पौने घंटे के बाद फिर सीटिंग होना फिर दो घंटे के बाद फिर बैठना, फिर बात करना, फिर खुले मन से चर्चा करना। पूरी तरह pursue करते रहना। मैं देख रहा था कि एक काम के लिए, और एकनाथ जी के लिए कहा जाता है One life one mission वो जी करके दिखाया था उन्होंने। उस काम की सफलता के लिए लोग कैसे मिले। और उन्होंने जब देश के युवा धन को राष्ट्र निर्माण में लगाने के लिए जो कल्पना की युवकों को जो आह्वान किया कि स्वामी विवेकानंद के लिए श्रद्धा रखते हैं, जो जी करके दिखाइए। हमें स्वामी विवेकानंद अच्छे लगे इतने से बात बनती नहीं है। उन्होंने भारत मां का जो रूप देखा है। जो कल्पना की है, उसको चरितार्थ करने के लिए हमारा भी तो कोई योगदान होना चाहिए और इस बात को लेकर वो लगे रहते थे। बहुत ही आग्रह से उस काम को करते थे, देश के युवाओं में चेतना जगाने के लिए।

मैं देख रहा हूं कि उस समय जब गुजरात में इस प्रकार के युवकों को साक्षात्कार होता था जिनको बाद में इस प्रक्रिया में जोड़ना होता था, साक्षात्कार के लिए जो लोग बैठते थे तो मुझे भी उसमें बैठने का सौभाग्य मिलता था। उनकी जो टीम आती थी, साक्षात्कार करती थी। पहला लेयर जो पार होता था, बाद में एकनाथ जी स्वयं उनसे बात करते थे। मैं देख रहा था उस पूरी प्रक्रिया से जब एकनाथ जी को कोई नौजवान मिलता था तो वो कहता था अब यहीं से घर वापस नहीं जाना है। एकनाथ जी ले जाओ मुझे। मैं अब जो कहेंगे कर दूंगा। मैं समझता हूं यह अपने आप में बहुत बड़ी उनकी सिद्धि थी। स्वामी विवेकानंद जी ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। उसी आदर्श और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वो भी रामकृष्ण मिशन सारी प्रवृत्तियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर करके चले वर्ना कभी कभार एक ही प्रकार से दो संस्थान आमने सामने हो जाते हैं और parallel चलने लग जाते हैं। एकनाथ जी को लक्ष्य पर इतनी बड़ी श्रद्धा थी कि वे Means के विषय में ऐसी कोई चीज पसंद नहीं करते थे जिसके कारण, अंतिम जो लक्ष्य है उस लक्ष्य पर पहुंचते थे और ये काम वो लगातार करते रहते थे। उनका उदार मन भी रहता था।

वे Perfectionist थे सबने उनका परफेक्शन का स्वभाव कैसा है बारीकी से देखा है। सादगी उनकी कैसी थी। इतना बड़ा शिला स्मारक बनाया, अरबों खरबों रुपये का शिला स्मारक बनाया। लेकिन एकनाथ जी स्वयं वहां जिस कमरे में रहते थे उसकी छत टीन की एक छत थी, एक कमरा था। उसी में रहते थे वर्ना इतना बड़ा construction का काम चल रहा है

अरबों खरबों रुपये लगे हैं, वे भी अपने लिए अच्छा बढिया सा मकान वहां बना सकते थे, छोटा बंगला बना सकते थे, उसमें रह सकते थे। दुनिया उनको बिल्कुल बुरा नहीं मानती। लेकिन उन्होंने आखिरी अंत तक उसी छोटे से कुटिया में, मैं उसे कमरा नहीं कहूंगा, कुटिया थी, टीन की एक छत थी, जो लोग उनसे परिचित हैं भलीभांति जानते हैं उसी में रहे। यानि सपना पूरा करने के लिए सब कुछ करना और अपने लिए कुछ न करना, यह उन्होंने जीवन भर जो करके दिखाया और परफेक्शनिस्ट के नाते मैं नहीं मानता पूरे संघ परिवार में उनकी बराबरी भी कोई कर सकता है। वे, कागज हो तो कैसा हो, इसमें भी कम्प्रोमाइज नहीं करते थे।

एक बार गुजरात में आरएसएस का शिविर लगा था वो आए थे। तो एक परिवार में हमने उनका ठहरने का प्रबंध किया था। उस परिवार में वो set ही नहीं हो पाए। डिस्टर्ब रहते थे। तीन दिन रुकना था और कमरे में जब जाते थे, तो भी उनकी नजर वहां जाती थी, बाहर निकलते थे तो भी वहीं जाती थी। मैं पहले दो दिन नहीं मिल पाया। तीसरे दिन मैं उनके पास गया। मैंने कहा कि एकनाथ कैसा रहा, कोई कठिनाई तो नहीं हुई, क्योंकि हम बड़े शिविर में लगे थे और रात को वहां रुकते थे और फिर शिविर में आते थे। वे बोले ये जो ट्यूब लाइट हैं ना ये टेढ़ी लगती हैं। वो जब तक घर में थे उस परिवार के पास, जब तक उस ट्यूब लाइट को ठीक नहीं करवाया वह चैन से नहीं बैठे।

मुझे बराबर स्मरण है कि परम पूज्य गुरुजी का स्वर्गवास हुआ। रात को नौ बजकर पांच मिनट पर परम पूज्य गुरुजी ने अपना देह छोड़ा। बाद में मीडिया को सूचना करनी थी। अब समय बदल चुका है। अब रात को 11 बजे खबर दो तो भी पहुंच जाती है टेक्नोलॉजी इतनी बढ़ी हुई है। उस समय नौ बजे हुआ तो, यह आवश्यक था जल्दी से जल्दी मीडिया को जानकारी दी जाए। आगे का प्रश्न की अंत्येष्टि कब होगी, इसकी सूचना देनी थी। एकनाथ जी वहां मौजूद थे, गुरुजी ने देह छोड़ा। एकनाथ जी को कहा गया आप ड्राफ्ट बनाइयो। अब आप कल्पना कर सकते हैं, गुरुजी के प्रति एकनाथ जी की श्रद्धा, उनका समर्पण भाव, समय की पाबंदी, दुनिया को बताना है कि ऐसा हुआ है। अब ड्राफ्ट बनाने के लिए बैठे। समय की पाबंदी। उस समय कम्प्यूटर तो था नहीं। टाइप करें, तो वो भी बात बनती नहीं थी। उनके अक्षर बहुत छोटे होते थे। उनकी हैंडराइटिंग बहुत अच्छी थी। तीन-चार लाइन लिखते थे, उनको अच्छा नहीं लगता था तो कागज फेंक देते थे। पांच सात लाइन पर पहुंचते थे, फिर अच्छा नहीं लगता था। करीब आठ दस कागज Perfection नहीं आने के कारण और उधर सब परेशान थे, कि मीडिया में देरी हो रही है। जल्दी कीजिए। खैर, एकनाथ जी का Perfection का नेचर इतना हावी था कि वो नहीं कर पाये और मुझे याद है कि बाबा जी सत्य ने उनसे वह छीन लिया गया और कहा कि आपने जो किया है वह Perfect है और मैं इसे भेजता हूं और उन्होंने भेज दिया। और उनका यह जो कहीं पर भी एक शब्द इधर से उधर न हो जाए, यह उनकी विशेषता रही।

उनकी डायरी, मुझे मालूम नहीं उनकी डायरी को रखा गया, कैसे रखा गया, डायरी लिखने की उनकी अजब पद्धति थी। जैसे हम डायरी लिखते हैं वैसे वह नहीं लिखते थे। बहुत की अलग तरीका था। मिलने वाले व्यक्ति, उनसे हुई बातचीत और उसमें से काम न आने वाली अपने जीवन में उपयोगी बात, उसको वे छांटते थे, उसे अपनी डायरी में काट कर अलग रखते थे। मुझे नहीं लगता कि उन्होंने अपनी डायरी कभी छोड़ी हो।

कितने परिश्रमी थे। वे कभी बीमारी सहन नहीं कर पाते थे। थोड़ी से बीमारी से इतना Disturb हो जाते थे। परेशान हो जाते थे और अगल बगल वाले को परेशानी हो जाती थी। कभी कभी लगता है वो बालक अवस्था में हो जाते थे। क्योंकि मुझे लगता है मैं उनके निकट रहा हूं इसलिए मुझे लगता है जब मैं यहां आया हूं तो मैं और कोई भाषण करने की बजाय मैं ही कुछ पल के लिए एकनाथ जी को जी लूं और इस जीने के भाव से मेरे हृदय से बातें जो निकली हैं।

उनकी श्रद्धा युवकों में थी। जो बात विवेकानंद जी ने कही थी कि यदि मुझे 1000 युवक मिल जाएं, मैं दुनिया में यह कर सकता हूं। इनके मन में था विवेकानंद जी जैसे युवक कैसे तैयार किए जाएं वे इसी में लगे रहते थे। आज नार्थ ईस्ट के अन्दर इतना Silently जन सामान्य के जीवन में बदलाव का काम करके विवेकानंद केन्द्र ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। बहुत बड़ी भूमिका एकता के साथ-साथ इन कठिनाइयों के बीच भी हम देश के लिए कुछ कर सकते हैं। देश के लिए जी सकते हैं। अच्छे से अच्छे परिवार में पैदा हुए ये नौजवान सुख संपन्न जीवन में पले बढ़े ये नौजवान, एकनाथ जी के कहने पर नार्थ ईस्ट के जंगलों में अपनी जवानी खपा देने लग गए। ये छोटी चीज़ नहीं है और कभी कभी सन्यासी बनने से.. ऐसी महान विरासत हमारे देश में रही है कि एक बार आप सन्यासी बने और कपड़े धारण किए तो यह समाज अपने आप एक ऊंचाई पर set कर ही देता है। आपका मान-सम्मान करना, आपकी सुखसुविधा की चिंता करना इस समाज के सहज स्वभाव में है। लेकिन ऐसे कपड़े न पहनते हुए ऐसा जीवन जीने में बहुत दिक्कत होती है। समाज के मन में वो सन्यासी लिए होता है लेकिन ऐसे लोगों के लिए वह भाव नहीं होता है क्योंकि वो तो पतलून पहनकर आता है लेकिन भीतर से जीवन वो जी रहा होता है, जो एक सन्यासी से अपेक्षा होती है। यह एक ऐसा कठिन पल होता है जिस समय कभी कभी समाज की उपेक्षा, कभी कभी उदासीनता और कभी कभी यह कहना कि ठीक है आये हो बैठो। ऐसी अवस्था में इस जीवन को स्वीकार करते हुए इस जीवन को जीना यह सबसे कठिन काम है। अगर आप राजनेता हैं, तो लीडरी का दबदबा होता

है। अगर आप सन्यासी हैं तो उस परंपरा का दबदबा होता है, लेकिन ऐसी कोई विरासत के बिना एक झोला लेकर चल पड़ना कि एकनाथ जी ने कहा है, कि विवेकानंद जी की प्रेरणा है। यह मैं समझता हूँ कि यह एक असामान्य कार्य उन्होंने किया और ऐसे सैंकड़ों नौजवान लगे रहे।

दूसरा, उन्होंने इस आइडिया को institutionalise किया। परंपरा चलती रही, आज भी नौजवान हर वर्ष विवेकानंद केन्द्र से जुड़ते हैं, अपने कैरियर को छोड़कर जुड़ते हैं और वहीं पर लग जाते हैं, आगे परिवार बसाते हैं और परिवार को छोड़कर आगे अपना जीवन वहीं खपाते हैं। पूर्णतया One life one mission के साथ, समाज सेवा के सिवाय कोई मार्ग नहीं। भारत माता का कल्याण, स्वामी विवेकानंद के सपने को साकार करने का एक संकल्प यही उनके जीवन की विशेषता रही है और इसलिए मैं समझता हूँ कि देश के युवा के लिए राणाडे शताब्दी वर्ष युवाओं के मन को जगाने का वर्ष है और युवा भारत को दिव्य-भव्य बनाने का एक अवसर है। हमारा भारत युवा है वह दिव्य भी बने और भव्य भी बने। हम वो लोग नहीं हैं कि सिर्फ भव्यता चाहते हैं, हम वो लोग हैं जो दिव्यता भी चाहते हैं क्योंकि विश्व भारत से दिव्यता की अनुभूति की अपेक्षा कर रहा है और भारत का गरीब से गरीब व्यक्ति भारत की भव्यता की अपेक्षा करता है। दोनों का मेल करके इस देश के निर्माण की दिशा में हमें आगे बढ़ना है। इस काम की पूर्ति के लिए, मैं समझता हूँ एकनाथ जी की सहस्राब्दी हम लोगों को प्रेरणा देती है।

कभी कभी सामान्य मानव के जीवन में एक उलझन रहती है, ज्यादातर लोगों के जीवन में, जीवन का मकसद होता है- सफलता, लेकिन विवेकानंद केन्द्र हमें सिर्फ सफलता के मार्ग पर जाने की प्रेरणा नहीं देता है और यहीं पर बदलाव शुरू होता है। आप दुनिया में किसी को भी सुनिए, किसी को भी बताइए, हर कोई कहता है - भई सफल होओ! हर किसी का संदेश यही होता है। एकनाथ जी का संदेश 'सफल होओ', यहां पर नहीं रुकता था। उनका आग्रह रहा था सार्थक हों। सार्थक होने के लिए सफलता एक स्टेशन है। जो सार्थकता की ओर ले जाने के लिए आखिरी स्टेशन पर ले जाता है, लेकिन सफलता जिदंगी का अंतिम छोर नहीं हो सकती। आज का युग जो कि सफलता से ही बैंच मार्क हो गया है उसे सार्थकता की ओर ले जाना, ये बहुत ही सार्थक प्रयासों की आवश्यकता रखता है।

जब मैं यह बात किसी को बताता हूँ कि सफलता और सार्थकता में अन्तर क्या है तो, आज जगत इतना बदल गया है कि समझाना कठिन हो जाता है। लेकिन कोई सुने कि भई बिल गेट्स का काम क्या था? माइक्रोसॉफ्ट के द्वारा दुनिया भर में बहुत बड़ा नाम बना दिया। अरबों-खरबों रुपये कमा लिए। सफलता की ऊंचाइयों को पा लिया उन्होंने। लेकिन फिर - लगा सफल तो हुआ, सार्थक होना अभी बाकी है। और तब क्या किया। सारे रुपये डोनेशन में दे करके चल पड़े गरीब देशों में जाकर कहते हैं टॉयलेट बनवाओ और इसी में लग पड़े। वे जीवन की सार्थकता की अनुभूति कर रहे हैं। सफलता को सार्थकता की ऊंचाइयों तक कैसे ले जाएं। जीवन सिर्फ सफल नहीं, जीवन सार्थक कैसे हो। ये सार्थक जीवन की दिशा.. एकनाथ जी के शताब्दी वर्ष में हम संदेश देने में सफल होते हैं तो हमारे देश की युवा पीढ़ी को एक एक नया चिन्तन, नई दिशा, नया उत्साह, नया उमंग, नई प्रेरणा, नए संकल्प, नए लक्ष्य देने के लिए यह एक अवसर बनकर रह जाता है और उस अवसर को हमने लेना चाहिए।

एकनाथ जी कभी हार मानने वाले नहीं थे। वे हर आपत्ति को अवसर में पलटना, इसी को अवसर मानते थे। आपत्ति को अवसर में पलटना ! जब शिलान्यास की चर्चा चल रही थी, बहुत कठिनाईयां थीं। सरकारें अनुकूल नहीं थीं। उस पर क्लेम करने वाले बहुत लोग थे। मछुआरों के सामने संकट था कि हमारी रोजी रोटी का क्या होगा, कई प्रकार के संकट थे, लेकिन उन सारे संकटों को समझौते के माध्यम से, समाज के लोगों को साथ ले करके, उसका निराकरण हुआ। आज हिंदुस्तान के हर नागरिक को किसी जमाने में बद्रीनाथ-केदारनाथ की यात्रा करने का मन होता था.. आज देश के नागरिक को शिला स्मारक पर जाने का मन कर जाता है। ये काम इस पीढ़ी में इस महापुरुष ने किया। लेकिन उन्होंने निर्जीव स्मारक नहीं बनाया। एक चेतनबद्ध व्यवस्था को खड़ा कर दिया, जो चेतनबद्ध व्यवस्था समाज के जीवन में अविरल चेतना भरने का काम कर रही है। नई पीढ़ी निकलती रहे, राष्ट्र के प्रति समर्पित होती रहे और राष्ट्र कल्याण के लिए अपना जीवन लगाती रहे, ये परंपरा को उन्होंने आरंभ किया।

मेरा सौभाग्य है ऐसे महापुरुष की उंगली पकड़कर चलने का मुझे अवसर मिला है। ये सौभाग्य छोटा नहीं होता है। कभी वे सर पर हाथ रखते थे, पुचकारते थे मुझे कभी-कभी। मैं देखता था, वे दोपहर को सोते नहीं थे और हम उस वक्त सोते थे। तो मुझे कहते थे, खाना खाने के बाद हम टहलेंगे। तो वे टहलने के लिए ले जाते थे। उन्होंने मुझे दोपहर को सोने का बंद करवा दिया था। यानी, छोटी-छोटी चीजें, एक साथी को कैसे Develop करना, अपने साथी को कैसे विकसित करना, उसके विषय में कितना जागरूक प्रयास करना, ये उनके जीवन की विशेषता रही थी। मैं उनके जीवन को, उनके कार्य को, उनके सपनों को नमन करता हूँ। मुझे विश्वास है यह प्रयास देश के युवा पीढ़ी को सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा देगा। सफलता से सार्थकता की ओर कैसे आगे बढ़ें, इसका रास्ता प्रशस्त करेगा और सामान्य मानविकी जीवन में सार्थक होने का सपना जगे, इस दिशा में प्रयास सफल होंगे, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है।

मैं फिर एक बार इस महान प्रयास के लिए विवेकानंद केन्द्र से जुड़े हुए सभी लोगों को हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ। की उनका संदेश लोगों के जीवन में विकास लाएगा। बहुत बहुत साधूवाद देता हूँ।

अमित कुमार/सुरेंद्र कुमार/रजनी/मधुप्रभा/सोनिका

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

07-नवंबर-2014 16:51 IST

वाराणसी के लालपुर में ट्रेड फेसिलिटेशन सेंटर और क्राफ्ट्स म्यूजियम के शिलान्यास के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का भाषण

मंच पर विराजमान राज्यपाल, श्रीमान राम नाइक जी, केंद्र सरकार में मेरे साथी मंत्री श्रीमान गंगवार जी, उपस्थित सभी वरिष्ठ महानुभाव भाईयों और बहनों...

ये सिक्योरिटी वालों ने जो पर्दे बंद कर दिये बगल में थोड़ा-थोड़ा खोल दो। थोड़ा-थोड़ा खोल कर रखो ताकि हवा आए अंदर, मुझे भी कुछ दिखाई दे। यहां तो कुछ दिखता ही नहीं मुझे। ये पीछे भी जो सिक्योरिटी वाले हैं जरा खोल दिजिए पर्दे क्या जाता है आपका। अंदर बैठे हुए लोगों को थोड़ी हवा भी मिल जाए। उनको जरा टेंशन रहता है न सिक्योरिटी का।

मैं उत्तर प्रदेश के मंत्री महोदय श्रीमान अहमद हसन जी विशेष रूप से आज उपस्थित रहे। मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं। मैं आज यहां अपनों के बीच आया हूं। अब सरकारी व्यवस्था ऐसी रहती है कि व्यवस्था के कारण लगता है कि हम कोई मंच पर बैठने वाले व्यक्ति हैं और आप लोग उधर बैठने वाले व्यक्ति हो। लेकिन मेरे केस में वो नहीं है। मैंने बनारस को अपना एक ऐसा स्थान के रूप में पाया है कि जिस बनारस ने मुझे अपना बना लिया है और एक प्रकार से अपनों के बीच में आने का एक आनंद अलग होता है। कुछ समय पूर्व मैंने आना तय किया था लेकिन आंध्र में एक बहुत ही बड़ा cyclone आया उसके कारण मेरा वहां जाना जरूरी था उसके कारण मैं यहां नहीं आ पाया फिर कार्यक्रम में थोड़ा बदलाव हुआ। लेकिन मैं आज दो दिन के लिए आपके बीच हूं। आपके प्रतिनिधि के रूप में हूं। आपके सुख-दुख के साथी के रूप में हूं। आपके सेवक के रूप में आया हूं।

हमारे देश में कृषि क्षेत्र के बाद सबसे अधिक रोजगार देने वाला अगर कोई क्षेत्र है तो वो टैक्सटाइल है और कम पूंजी से ज्यादा लोग अपनी आजीविका चला सकते हैं। यह ऐसा क्षेत्र है कि जिसमें मजदूर और मालिक के बीच में खाई संभव ही नहीं है, दीवार संभव ही नहीं है, ऐसा क्षेत्र है। खेती में भी कभी अगर किसान मालिक है और मजदूर काम करता है तो एक खाई नजर आती है। यह एक क्षेत्र है कि जहां पर हैंडलूम हो, पावरलूम हो, उसका मालिक हो, उसके काम करने वाले और कोई बाहर के लोग हो, लेकिन पूरा माहौल एक परिवार के जैसे होता है। न कोई जाति बीच में होती है न कोई सम्प्रदाय होता है। एक अपनेपन का माहौल होता है और जैसे कपड़े के तानेबाने बुने जाते हैं वैसे ही ये बुनने वाले समाज के भी तानेबाने बुनते रहते हैं। यह गंगा-जमुना तहजीब की बात हो रही है ना। वो यही समाजिक ताना-बाना है। जो हमें हर हथकरघे से हर पावरलूम के साथ जुड़ा हुआ नजर आता है। और यह भारत की भी विरासत है। बनारस की विशेष विरासत है, लेकिन अगर समय रहते इन क्षेत्रों में अगर बदलाव नहीं आता है। इन क्षेत्रों में विकास नहीं होता है तो आप काल भय हो जाते हैं। ये क्षेत्र ऐसे हैं कि जिसमें एक तो customer को संतोष देना होता है। अब customer के पास आधुनिक युग में रोज नई variety आती है। वो पुरानी variety पर जाना नहीं चाहता। उसे नई variety चाहिए, नई product चाहिए। नया डिजाइन चाहिए, नया fabric चाहिए, नया finishing चाहिए, नया पैकेजिंग चाहिए, नया colour चाहिए। और जो यह बदलाव को समझ नहीं पाता है और अपना सालों पुराना काम करता रहता है। तो उसके, निश्चित जो परिवार रहते हैं वो तो उसके साथ खरीदी करते रहते हैं। लेकिन न उसका विस्तार होता है न उसका कोई बढ़ावा होता है और इसलिए अगर भारत में यह एक उद्योग ऐसा है जो सर्वाधिक लोगों को रोजगार देता है, गरीब लोगों को रोजगार देता है, हमारे जुलाहे परिवार को रोजगार देता है और समाज के सब वर्ग के लोग इसमें जुड़े हुए होते हैं। उसे भी दुनिया के साथ ताल मिलाने वाला बनाना पड़ता है। आधुनिक जो modernisation हो रहा है उसके सामने वो टिक सके यह व्यवस्था विकसित करना आवश्यक होती है। और इसलिए सिर्फ रुपये दें, पम्पिंग करे इससे काम बनता नहीं है। एक comprehensive vision के साथ इस काम को आगे बढ़ाना पड़ता है और आज उसका शुभारंभ बनारस की धरती से हो रहा है। सिर्फ रुपये पैसों से, कोई बैंक लोन दें दे। इसी से काम चल जाएगा ऐसा नहीं है और इसलिए यह आवश्यक है कि उसके हर छोटे विषय को कैसे Develop किया जाए। आज समय कह सकता है कुछ लोग प्रयोग भी कर रहे हैं कि computer डिजाइनिंग के द्वारा weaving का काम आसानी से किया जा सकता है। स्पीड भी बढ़ाई जा सकती है और wastage कम से कम हो यह संभावना बनी है। हम उस दिशा में कैसे आगे बढ़ें। Technology up gradation कैसे करें। उसी प्रकार से human resource development यह जरूरी नहीं है कि हथकरघा और पावरलूम चलाने वाले हमारे कारीगरों को NIFT में यह NID में जाकर के पढ़ेंगे और बड़ी डिग्री लेकर आएंगे तब काम करेंगे। यह जरूरी नहीं है। यह ज्ञान उनको आसानी से उनके यहां भी दिया जा सकता है, उनके स्थान पर दिया जा सकता है और सरकार की कोशिश यह है कि डिजाइनिंग के क्षेत्र में

हमारे इस क्षेत्र में जुड़े हुए निचले तबके के लोग भी अगर उनके साथ जुड़ जाते हैं उनको इसका लाभ मिलता है, तो प्रोडक्शन में, स्पीड में, क्वालिटी में, डिजाइन में एकदम से improvement लाने के संभावना रहती है। और इसलिए सरकार ने जो पूरी योजना को लागू करने का प्रयास किया है, उसमें एक तो Technology up gradation हो। हम दुनिया का मुकाबला कर सके भले ही वो Handloom हो या Power loom हो। हम दुनिया का मुकाबला कर सके इस प्रकार से Technology up gradation की दिशा में रिसर्च हो। उस Technology के अनुकूल यंत्रों का Manufacturing हो, वो उनको प्राप्त हो। उस दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता है। और सरकार ने उस दिशा में काम उठाया है। दूसरा जैसे मैंने कहा कि Human Resource Development आधुनिक से आधुनिक डिजाइन क्योंकि जो इस क्षेत्र में काम कर रहा है, उसको स्वभावगत मालूम है। यह बदलाव करूंगा तो अच्छा लगेगा, लेकिन अगर उसको scientific ढंग से जब train किया जाए, काम करते-करते train किया जाए। जरूरी नहीं कि बहुत बड़े-बड़े कॉलेज में जाना पड़े। वो अपने यहां रहकर भी इन चीजों को सीख सखता है। उस काम को हम आगे बढ़ाना चाहते हैं।

तीसरी बात है हमारी नई पीढ़ी। हमारी नई पीढ़ी इस क्षेत्र में मजबूरी के कारण नहीं, गौरव के साथ कैसे जुड़े इस विषय में हमने गंभीरता से सोचना चाहिए। अब यह तो संभव नहीं कि कोई पेट भूखा रखकर के नई-नई योजनाओं से जुड़ता रहेगा। उनकी income के संबंध में assured व्यवस्था होनी चाहिए, गारंटी होनी चाहिए। लेकिन हम यह समझें आज पूरे हिंदुस्तान भर में कोई महिला ऐसी नहीं होगी, कोई महिला। गरीब से गरीब क्यों न हो, अनपढ़ से अनपढ़ क्यों न हो। जिसके कान में 'बनारसी साड़ी' ये शब्द न पड़ा हो। अब आज जो यहां लोग हैं उनको पूछा जाए कि यह बात पहुंचाने में भई तुम्हारा क्या Contribution है। तो आज जो लोग यहां बैठे हैं, उनका कोई विशेष Contribution नहीं है। लेकिन हमारे पूर्वजों ने इस काम को जिस साधना के साथ किया, जिस पवित्रता के साथ किया और ऊंचाई देखिए हमारे पूर्वजों ने एक ऐसी नींव रखी है कि हर मां अपनी बेटी की शादी जो जीवन का सबसे अमूल्य अवसर होता है, उसके मन का एक सपना रहता है कि बेटी को शादी में बनारसी साड़ी पहनाए। यह कितनी बड़ी विरासत हमारे पास है। न हमें कोई Marketing करने की जरूरत है क्योंकि लोगों को मालूम है। आप कल्पना कर सकते हैं कि भारत की सवा सौ करोड़ जनसंख्या है। आने वाले कुछ वर्षों में कम से कम 20 करोड़ से ज्यादा बेटियों की शादी होगी। मतलब 20 करोड़ साड़ी का मार्केट है। अब बनारस वाले सोचे कि सोचा है कभी इतना बड़ा मार्केट। आपने कभी सोचा है कि इतना बड़ा मार्केट आपके लिए wait कर रहा है, इंतजार कर रहा है। लेकिन हमने क्या किया, हम जितना कर सकते थे उतना किया। जितना जिसके पास पहुंचा उतना पहुंचा फिर बाकी लोगों ने क्या किया आर्टिफिशियल माल जहां से मिलता था वो ले लिया। हम इस Production quantum को इतना बढ़ाए, ताकि भारत के हर परिवार की need है, हर परिवार एक पीढ़ी में जितनी बेटियां हैं उतनी ज्यादा साड़ियां खरीदने की इच्छा रखता ही रखता है। यानी आपका मार्केट assured मार्केट है और जिनका assured मार्केट हो उनका काम यही होता है कि उस कस्टमर को कैसे बनाए रखे और बनाए रखने को तरीका होता है आपकी क्वालिटी, आपके डिजाइन, आपकी सर्विस, आपका ये परंपराएं। और उन कामों को करने के लिए आज जो Trade Facilitation जो बन रहा है जमीन की अगर लागत जोड़ दे तो यह शायद 500 करोड़ का प्रोजेक्ट हो जाएगा। लेकिन अगर जमीन की लागत में न गिनु तो भी आज बनारस को डेढ़ सौ करोड़ रुपये का एक बड़ा प्रोजेक्ट मिल रहा है। और यह सिर्फ डेढ़ सौ करोड़ का मसला नहीं है। जब ये पूरा सेंटर तैयार हो जाएगा। काशी में आने वाला कोई भी भारतीय या विदेशी टूरिस्ट ऐसा नहीं होगा, जो यहां की मुलाकात नहीं लेगा। यह एक ही जगह पर यहां की शिल्पकृतियां, यहां के टेक्सटाइल की चीजें, जो यहां की विरासत है, उस विरासत को एक जगह पर प्राप्त न कर सके ऐसा कोई भी टूरिस्ट नहीं होगा। वो पूजा-पाठ के लिए आया होगा तो भी आएगा, वो गंगा स्नान के लिए आया होगा तो भी आयेगा। वो पुरातन शहर को देखने के लिए दुनिया के किसी कोने से आया है तो भी आएगा, यानी आपको घर बैठे गंगा जैसे माहौल होने वाला है। और इसलिए यह Facilitation centre यह आपका काम है कि आप इसमें किस प्रकार से भागीदार बनते हैं। आप इसमें किस प्रकार से जुड़ते हैं। आप अपनी चीजों को किस प्रकार से वहां डिसप्ले करते हैं। आप मार्केट को आकर्षित करने के लिए कौन से आधुनिक तरीकों को अपनाते हैं।

आज विश्व में ई-बिजनेस बढ़ता चला जा रहा है। ग्लोबल मार्केट के लिए संभावनाएं, टेक्नोलॉजी के कारण बनी हैं। विदेशों में भी बनारसी शब्द नया नहीं है। मैं एक बार सालों पहले बोस्टन गया था। बोस्टन एक प्रकार से विद्वानों की नगरी मानी जाती है, तो बोस्टन में मुझे दो चीजों का बड़ा आश्चर्य हुआ था। मुझे एक गली में ले गए दिखाने के लिए। बहुत चौड़ी नहीं थी पतली गली थी, अमरीका में जिस प्रकार का रहता है ऐसा नहीं, थोड़ी पतली गली थी। मुझे वहां ले गए और वहां के लोगों ने मुझे बताया कि यह जो पूरा मार्ग है इसे हमारे यहां बनारस स्ट्रीट के रूप में जाना जाता है। तो मैंने कहा कि क्या कारण है यह जरा थोड़ी साकड़ी, संकड़ी है इसलिए है क्या, narrow है इसलिए है क्या उन्होंने कहा कि नहीं हमारे यहां यूनिवर्सिटी के जो top most टीचर हैं वे सब इस इलाके में रहते हैं और इसलिए यह विद्वानों की जगह है और हम लोग भी उनको यहां गुरु शब्द से बुलाते हैं। तो एक तो उस गली में गुरु शब्द और दूसरा उस गली का नाम बनारस स्ट्रीट। ये मेरे लिए एक ऐसा आनंद और गौरव के पल थे। मैं 15-20 साल पहले की बात बता रहा हूं। आप कल्पना कर सकते हैं कि बनारस शब्द ये शब्द दुनिया के लिए अपरिचित नहीं है। हमारे पूर्वजों के प्रयास से हो चुका है। e-commerce के द्वारा, ये जो विरासत है। इस विरासत का हम एक Strategically use करें, हम Global market को छूने का प्रयास करें और

Global requirement के अनुसार हम अपने आप को modify करें। मुझे विश्वास है कि हम इस पूरे उद्योग को और तेज गति से आगे बढ़ा सकते हैं और नई ऊचाइयों पर ले जा सकते हैं।

भारत सरकार ने एक और भी निर्णय किया है कि यह बात सही है कि इस क्षेत्र में काम करने वालों को सरकार की मदद मिलना जरूरी है, आर्थिक सहायता आवश्यक है और इसलिए हमने तय किया है कि जो प्रधानमंत्री जन-धन योजना बनी है, बैंक में खाते खोले हैं अब ये जो लाभार्थी होंगे। इनको उनके खाते में Direct पैसे जमा कराना तय किया है इसलिए न कहीं रुकावट आएगी, न कहीं लीकेज आएगा, न परेशानी होगी और न ही इस मदद को लेने के लिए आपको चक्कर काटना पड़ेगा। ये कैसे Smooth हो व्यवस्थाएं। सामान्य मानवीय और गरीब से गरीब व्यक्ति, उनको इसका लाभ कैसे मिले, उस पर हमारा ध्यान केंद्रित है।

बनारस! किसी एक शहर के पास इतनी सारी विरासत हो। ऐसा शायद दुनिया में कहीं नहीं होगा। कला हो, नृत्य हो, नाट्य हो, संगीत हो, शिल्प हो, मंदिर हो, पवित्रता हो, Spirituality हो, भाईचारा हो। क्या कुछ नहीं है आपके पास। ये ऐसी विरासत है। इसी विरासत को लेकर के हम एक आधुनिक गतिविधि वाला, आधुनिक सोच वाला और पुरातन नींव का गौरव करने वाला अपने बनारस का विकास कैसे करें। मेरे मन में बहुत सारी योजनाएं हैं इस काम को करने के लिए। मैं आज बोलूंगा कम क्योंकि लोगों को लगता है कि मोदी जी आज आएंगे तो ये घोषणा करेंगे, वो घोषणा करेंगे। वो अपने आप ही ये सब कहते रहते हैं। मेरी जिम्मेवारी है कुछ करके दिखाना और जैसे-जैसे काम होता जाएगा, मैं आपको बताता जाऊंगा। करने से पहले बड़ी-बड़ी बातें नहीं करूंगा और मुझे विश्वास है कि आप लोगों के साथ विचार-विमर्श कर-करके जो भी सुझाव आ रहे हैं उन्हें पूरा करने का पूरा प्रयास है।

ये Centre थोड़ा काशी से बाहर बन रहा है। हमारी कोशिश ये थी कि शहर के पास ही ये बन जाए। उत्तर प्रदेश सरकार से उनकी अपनी एक जमीन थी वो उनसे हमने मांगी थी लेकिन वो हमें मिली नहीं इसलिए थोड़ा हमें दूर आना पड़ा लेकिन फिर भी ये विकास भी, बनारस के विकास में एक बड़ी अहम भूमिका निभाएगी।

पिछले हमने एक बहुत बड़ा निर्णय किया है। आपने सुना होगा मैं चुनाव के समय एक बात कहा करता था। सामान्य रूप से राजनेताओं का स्वभाव ये रहता है कि बातों को भुला देना और अगले चुनाव में नई बातें लेकर के आना, ये सामान्य रूप से स्वभाव रहता है लेकिन मैं उस प्रकार की राजनीति में से पैदा नहीं हुआ हूं। मैं तो आपके प्यार के कारण आया हूं और जो कुछ भी मैं बना हूं आपको प्यार के कारण बना हूं लेकिन मेरे मन में मन से लग रहा है हमेशा कि हमें, भारत को विकास करना है तो भारत का सिर्फ पश्चिमी छोर का विकास हो तो ये देश कभी विकास नहीं कर सकता है। भारत के पूर्वी छोर का विकास भी उतना ही आवश्यक है। एक हाथ मजबूत हो और दूसरा हाथ अपंग हो तो शरीर मजबूत नहीं माना जाता। हमारी भारत माता तब मजबूत होती है अगर उसका पश्चिमी छोर मजबूत है तो उसका पूर्वी छोर भी मजबूत होना चाहिए और उसमें चाहे हमारा पूर्वी उत्तर प्रदेश हो, चाहे हमारा झारखंड हो, बिहार हो, असम हो, North-East हो, उड़ीसा हो। ऐसे राज्य हैं कि जहां पर विकास की संभावनाओं को और तलाशना और प्रयास करना ताकि पूरा देश सामान्य रूप से आगे बढ़े और इसलिए मैंने अपना पूरा ध्यान हिंदुस्तान के इस पूर्वी हिस्से पर केंद्रित किया है।

पिछले हफ्ते हमने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया था। मैं नहीं जानता कि यहां के अखबारों में आया कि नहीं आया। उत्तर प्रदेश की उसमें भी खासकर पूर्वी उत्तर प्रदेश की 16 जिलों की बैंकें बंद पड़ी हैं। आर्थिक संकट के कारण, कुछ घोटालों के कारण, कुछ राजनीतिक विकृतियों के कारण और उसके कारण नुकसान सबसे ज्यादा मध्यम वर्ग के, निम्न वर्ग के, छोटे किसान इनको हुआ है। इन बैंकों को जिंदा करना बहुत जरूरी था और इन बैंकों में ताकत नहीं थी कि वो अपने आप जिंदा हो जाएं। इनके लिए कोई मदद की आवश्यकता थी तो पिछले सप्ताह भारत सरकार ने करीब 2375 करोड़ रुपये का पैकेज देना तय किया है, घोषित किया है और उसके तहत इस इलाके में 16 बैंक देवरिया, बहराइच, सिद्धार्थनगर, सुल्तानपुर, जौनपुर, हरदोई, बस्ती, बलिया, आजमगढ़, गोरखपुर, फतेहपुर, सीतापुर, वाराणसी, इलाहाबाद, गाजीपुर and फैजाबाद, ये बैंकें जीवित हो जाएंगी और इसके कारण यहां का सामान्य व्यापारी, गरीब व्यक्ति इन बैंकों के साथ अपना व्यवहार शुरू कर सकता है। ये काम जितना तेजी से जल्दी हो और मेरा राज्य सरकार से आग्रह रहेगा कि अगर इन बैंकों को पैसे तो दिए हैं लेकिन बैंकें तब बच पाएंगी और सामान्य मानवी का भला तब होगा जब वहां पर राजनीति को थोड़ा बाहर रखा जाए। एक बार बैंक जिंदा करके सामान्य मानवी का भला करने की दिशा में काम हो और सभी दल के लोग उसमें होंगे। ऐसा नहीं है कि एक ही दल के लोग होंगे। बैंकों के कारोबार में सभी दल के लोग होते हैं। सब मिलकर के, राजनीति से ऊपर उठकर के इन बैंकों की तरफ ध्यान देंगे तो इस पूर्वी उत्तर प्रदेश सबसे ज्यादा जिले इस पूर्वी उत्तर प्रदेश के बैंक के हैं। ये अगर इसके कारण revive हो जाती है तो यहां की आर्थिक गतिविधि में बहुत लाभ होगा।

मैं आज और कल यहां हूं, कई लोगों से मिलने वाला हूं बहुत सी बातें करने वाला हूं और मैं आपको इतना विश्वास दिलाता हूं। आपने मुझ पर भरोसा किया है, आपने मुझे भरपूर प्यार दिया है, मैं आपका हूं, आपके लिए हूं और मुझे ईश्वर ने

जितनी बुद्धि क्षमता, शक्ति दी है। पूरा उपयोग इस क्षेत्र के विकास के लिए यहां के गरीबों की भलाई के लिए मैं करता रहूंगा फिर एक बार मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ।

धन्यवाद।

महिमा वशिष्ट, तारा, मुस्तकीम खान

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

25-दिसंबर-2014 20:37 IST

**बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवम् प्रशिक्षण मिशन के विमोचन के दौरान
प्रधानमंत्री द्वारा दिए गये भाषण का मूल पाठ**

उपस्थित सभी महानुभाव,

आप सबको क्रिसमस के पावन पर्व की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। ये आज सौभाग्य है कि 25 दिसंबर, पंडित मदन मोहन मालवीय जी की जन्म जयंती पर, मुझे उस पावन धरती पर आने का सौभाग्य मिला है जिसके कण-कण पर पंडित जी के सपने बसे हुए हैं। जिनकी अंगुली पकड़ कर के हमें बड़े होने का सौभाग्य मिला, जिनके मार्गदर्शन में हमें काम करने का सौभाग्य मिला ऐसे अटल बिहारी वाजपेयी जी का भी आज जन्मदिन है और आज जहां पर पंडित जी का सपना साकार हुआ, उस धरती के नरेश उनकी पुण्यतिथि का भी अवसर है। उन सभी महापुरुषों को नमन करते हुए, आज एक प्रकार से ये कार्यक्रम अपने आप में एक पंचामृत है। एक ही समारोह में अनेक कार्यक्रमों का आज कोई-न-कोई रूप में आपके सामने प्रस्तुतिकरण हो रहा है। कहीं शिलान्यास हो रहा है तो कहीं युक्ति का Promotion हो रहा है तो Teachers' Training की व्यवस्था हो रही है तो काशी जिसकी पहचान में एक बहुत महत्वपूर्ण बात है कि यहां कि सांस्कृतिक विरासत उन सभी का एक साथ आज आपके बीच में उद्घाटन करने का अवसर मुझे मिला है। मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

मैं विशेष रूप से इस बात की चर्चा करना चाहता हूं कि जब-जब मानवजाति ने ज्ञान युग में प्रवेश किया है तब-तब भारत ने विश्व गुरु की भूमिका निभाई है और 21वीं सदी ज्ञान की सदी है मतलब की 21वीं सदी भारत की बहुत बड़ी जिम्मेवारियों की भी सदी है और अगर ज्ञान युग ही हमारी विरासत है तो भारत ने उस एक क्षेत्र में विश्व के उपयोगी कुछ न कुछ योगदान देने की समय की मांग है। मनुष्य का पूर्णत्व Technology में समाहित नहीं हो सकता है और पूर्णत्व के बिना मनुष्य मानव कल्याण की धरोहर नहीं बन सकता है और इसलिए पूर्णत्व के लक्ष्य को प्राप्त करना उसी अगर मकसद को लेकर के चलते हैं तो विज्ञान हो, Technology हो नए-नए Innovations हो, Inventions हो लेकिन उस बीच में भी एक मानव मन एक परिपूर्ण मानव मन ये भी विश्व की बहुत बड़ी आवश्यकता है।

हमारी शिक्षा व्यवस्था Robot पैदा करने के लिए नहीं है। Robot तो शायद 5-50 वैज्ञानिक मिलकर शायद लेबोरेटरी में पैदा कर देंगे, लेकिन नरकर्णी करे तो नारायण हो जाए। ये जिस भूमि का संदेश है वहां तो व्यक्तित्व का संपूर्णतम विकास यही परिलक्षित होता है और इसलिए इस धरती से जो आवाज उठी थी, इस धरती से जो संस्कार की गंगा बही थी उसमें संस्कृति की शिक्षा तो थी लेकिन इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण था शिक्षा की संस्कृति और आज कहीं ऐसा तो नहीं है सदियों से संजोयी हुई हमारी शैक्षिक परंपरा है, जो एक संस्कृतिक विरासत के रूप में विकसित हुई है। वो शिक्षा की संस्कृति तो लुप्त नहीं हो रही है? वो भी तो कहीं प्रदूषित नहीं हो रही है? और तब जाकर के आवश्यकता है कि कालवाह्य चीजों को छोड़कर के उज्ज्वलतम भविष्य की ओर नजर रखते हुए पुरानी धरोहर के अधिष्ठान को संजोते हुए हम किस प्रकार की व्यवस्था को विकसित करें जो आने वाली सदियों तक मानव कल्याण के काम आए।

हम दुनिया के किसी भी महापुरुष का अगर जीवन चरित्र पढ़ेंगे, तो दो बातें बहुत स्वाभाविक रूप से उभर कर के आती हैं। अगर कोई पूछे कि आपके जीवन की सफलता के कारण तो बहुत एक लोगों से एक बात है कि एक मेरी मां का योगदान, हर कोई कहता है और दूसरा मेरे शिक्षक का योगदान। कोई ऐसा महापुरुष नहीं होगा जिसने ये न कहा हो कि मेरे शिक्षक का बहुत बड़ा contribution है, मेरी जिंदगी को बनाने में, अगर ये हमें सच्चाई को हम स्वीकार करते हैं तो हम ये बहुमूल्य जो हमारी धरोहर है इसको हम और अधिक तेजस्वी कैसे बनाएं और अधिक प्राणवान कैसे बनाएं और उसी में से विचार आया कि, वो देश जिसके पास इतना बड़ा युवा सामर्थ्य है, युवा शक्ति है।

आज पूरे विश्व को उत्तम से उत्तम शिक्षकों की बहुत बड़ी खोट है, कमी है। आप कितने ही धनी परिवार से मिलिए, कितने ही सुखी परिवार से मिलिए, उनको पूछिए किसी एक चीज की आपको आवश्यकता लगती है तो क्या लगती है। अरबों-खरबों रुपयों का मालिक होगा, घर में हर प्रकार का सुख-वैभव होगा तो वो ये कहेगा कि मुझे अच्छा टीचर चाहिए मेरे बच्चों के लिए। आप अपने ड्राइवर से भी पूछिए कि आपको क्या इच्छा है तो ड्राइवर भी कहता है कि मेरे बच्चे भी अच्छी शिक्षा ही मेरी कामना है। अच्छी शिक्षा इंफ्रास्ट्रक्चर के दायरे में नहीं आती। Infrastructure तो एक व्यवस्था है। अच्छी शिक्षा अच्छे

शिक्षकों से जुड़ी हुई होती है और इसलिए अच्छे शिक्षकों का निर्माण कैसे हो और हम एक नए तरीके से कैसे सोचें?

आज 12 वीं के बीएड, एमएड वगैरह होता है वो आते हैं, ज्यादातर बहुत पहले से ही जिसने तय किया कि मुझे शिक्षक बनना है ऐसे बहुत कम लोग होते हैं। ज्यादातर कुछ न कुछ बनने को try करते-करके करके हुए आखिर कर यहां चल पड़ते हैं। मैं यहां के लोगों की बात नहीं कर रहा हूँ। हम एक माहौल बना सकते हैं कि 10वीं, 12वीं की विद्यार्थी अवस्था में विद्यार्थियों के मन में एक सपना हो मैं एक उत्तम शिक्षक बनना चाहता हूँ। ये कैसे बोया जाए, ये environment कैसे create किया जाए? और 12वीं के बाद पहले Graduation के बाद law faculty में जाते थे और वकालत धीरे-धीरे बदलाव आया और 12वीं के बाद ही पांच Law Faculty में जाते हैं और lawyer बनकर आते हैं। क्या 10वीं और 12वीं के बाद ही Teacher का एक पूर्ण समय का Course शुरू हो सकता है और उसमें Subject specific मिले और जब एक विद्यार्थी जिसे पता है कि मुझे Teacher बनना है तो Classroom में वो सिर्फ Exam देने के लिए पढ़ता नहीं है वो अपने शिक्षक की हर बारीकी को देखता है और हर चीज में सोचता है कि मैं शिक्षक बनूंगा तो कैसे करूंगा, मैं शिक्षक बनूंगा ये उसके मन में रहता है और ये एक पूरा Culture बदलने की आवश्यकता है।

उसके साथ-साथ भले ही वो विज्ञान का शिक्षक हो, गणित का शिक्षक हो उसको हमारी परंपराओं का ज्ञान होना चाहिए। उसे Child Psychology का पता होना चाहिए, उसको विद्यार्थियों को Counselling कैसे करना चाहिए ये सीखना चाहिए, उसे विद्यार्थियों को मित्रवत व्यवहार कैसे करना है ये सीखना चाहिए और ये चीजें Training से हो सकती हैं, ऐसा नहीं है कि ये नहीं हो सकता है। सब कुछ Training से हो सकता है और हम इस प्रकार के उत्तम शिक्षकों को तैयार करें मुझे विश्वास है कि दुनिया को जितने शिक्षकों की आवश्यकता है, हम पूरे विश्व को, भारत के पास इतना बड़ा युवा धन है लाखों की तादाद में हम शिक्षक Export कर सकते हैं। Already मांग तो है ही है हमें योग्यता के साथ लोगों को तैयार करने की आवश्यकता है और एक व्यापारी जाता है बाहर तो Dollar या Pound ले आता है लेकिन एक शिक्षक जाता है तो पूरी-पूरी पीढ़ी को अपने साथ ले आता है। हम कल्पना कर सकते हैं कितना बड़ा काम हम वैश्विक स्तर पर कर सकते हैं और उसी एक सपने को साकार करने के लिए पंडित मदन मोहन मालवीय जी के नाम से इस मिशन को प्रारंभ किया गया है। और आज उसका शुभारंभ करने का मुझे अवसर मिला है।

आज पूरे विश्व में भारत के Handicraft तरफ लोगों का ध्यान है, आकर्षण है लेकिन हमारी इस पुरानी पद्धतियों से बनी हुई चीजें Quantum भी कम होता है, Wastage भी बहुत होता है, समय भी बहुत जाता है और इसके कारण एक दिन में वो पांच खिलौने बनाता है तो पेट नहीं भरता है लेकिन अगर Technology के उपयोग से 25 खिलौने बनाता है तो उसका पेट भी भरता है, बाजार में जाता है और इसलिए आधुनिक विज्ञान और Technology को हमारे परंपरागत जो खिलौने हैं उसका कैसे जोड़ा जाए उसका एक छोटा-सा प्रदर्शन मैंने अभी उनके प्रयोग देखे, मैं देख रहा था एक बहुत ही सामान्य प्रकार की टेक्नोलोजी को विकसित किया गया है लेकिन वो उनके लिए बहुत बड़ी उपयोगिता है वरना वो लंबे समय अरसे से वो ही करते रहते थे। उसके कारण उनके Production में Quality, Production में Quantity और उसके कारण वैश्विक बाजार में अपनी जगह बनाने की संभावनाएं और हमारे Handicrafts की विश्व बाजार की संभावनाएं बढ़ी हैं। आज हम उनको Online Marketing की सुविधाएं उपलब्ध कराएं। युक्ति, जो अभियान है उसके माध्यम से हमारे जो कलाकार हैं, काश्तकारों को, हमारे विश्वकर्मा हैं ये इन सभी विश्वकर्माओं के हाथ में हुनर देने का उनका प्रयास। उनके पास जो skill है उसको Technology के लिए Up-gradation करने का प्रयास। उस Technology में नई Research हो उनको Provide हो, उस दिशा में प्रयास बढ़ रहे हैं।

हमारे देश में सांस्कृतिक कार्यक्रम तो बहुत होते रहते हैं। कई जगहों पर होते हैं। बनारस में एक विशेष रूप से भी आरंभ किया है। हमारे टूरिज्म को बढ़ावा देने में इसकी बहुत बड़ी ताकत है। आप देखते होंगे कि दुनिया ने, हम ये तो गर्व करते थे कि हमारे ऋषियों ने, मुनियों ने हमें योग दिया holistic health के लिए preventive health के लिए योग की हमें विरासत मिली और धीरे-धीरे दुनिया को भी लगने लगा योग है क्या चीज और दुनिया में लोग पहुंच गए। नाक पकड़कर के डॉलर भी कमाने लग गए। लेकिन ये शास्त्र आज के संकटों के युग में जी रहे मानव को एक संतुलित जीवन जीने की ताकत कैसे मिले। योग बहुत बड़ा योगदान कर सकता है। मैं सितंबर में UN में गया था और UN में पहली बार मुझे भाषण करने का दायित्व था। मैंने उस दिन कहा कि हम एक अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाएं और मैंने प्रस्तावित किया था 21 जून। सामान्य रूप से इस प्रकार के जब प्रस्ताव आते हैं तो उसको पारित होने में डेढ़ साल, दो साल, ढाई साल लग जाते हैं। अब तक ऐसे जितने प्रस्ताव आए हैं उसमें ज्यादा से ज्यादा 150-160 देशों ने सहभागिता दिखाई है। जब योग का प्रस्ताव रखा मुझे आज बड़े आनंद और गर्व के साथ कहना है और बनारस के प्रतिनिधि के नाते बनारस के नागरिकों को ये हिसाब देते हुए, मुझे गर्व होता है कि 177 Countries Co- sponsor बनी जो एक World Record है। इस प्रकार के प्रस्ताव में 177 Countries का Co- sponsor बनना एक World Record है और जिस काम में डेढ़-दो साल लगते हैं वो काम करीब-करीब 100 दिन में पूरा हो गया। UN ने इसे 21 जून को घोषित कर दिया ये भी अपने आप में एक World Record है।

हमारी सांस्कृतिक विरासत की एक ताकत है। हम दुनिया के सामने आत्मविश्वास के साथ कैसे ले जाएं। हमारा गीत-संगीत, नृत्य, नाट्य, कला, साहित्य कितनी बड़ी विरासत है। सूरज उगने से पहले कौन-सा संगीत, सूरज उगने के बाद कौन-सा संगीत यहां तक कि बारीक रेखाएं बनाने वाला काम हमारे पूर्वजों ने किया है और दुनिया में संगीत तो बहुत प्रकार के हैं लेकिन ज्यादातर संगीत तन को डोलाते हैं बहुत कम संगीत मन को डोलाते हैं। हम उस संगीत के धनी हैं जो मन को डोलाता है और मन को डोलाने वाले संगीत को विश्व के अंदर कैसे रखें यही प्रयासों से वो आगे बढ़ने वाला है लेकिन मेरे मन में विचार है क्या बनारस के कुछ स्कूल, स्कूल हो, कॉलेज हो आगे आ सकते हैं क्या और बनारस के जीवन पर ही एक विषय पर ही एक स्कूल की Mastery हो बनारस की विरासत पर, कोई एक स्कूल हो जिसकी तुलसी पर Mastery हो, कोई स्कूल हो जिसकी कबीर पर हो, ऐसी जो भी यहां की विरासत है उन सब पर और हर दिन शाम के समय एक घंटा उसी स्कूल में नाट्य मंच पर Daily उसका कार्यक्रम हो और जो Tourist आए जिसको कबीर के पास जाना है उसके स्कूल में चला जाएगा, बैठेगा घंटे-भर, जिसको तुलसी के पास जाना है वो उस स्कूल में जाए बैठेगा घंटे भर, धीरे-धीरे स्कूल टिकट भी रख सकता है अगर popular हो जाएगी तो स्कूल की income भी बढ़ सकती है लेकिन काशी में आया हुआ Tourist वो आएगा हमारे पूर्वजों के प्रयासों के कारण, बाबा भोलेनाथ के कारण, मां गंगा के कारण, लेकिन रुकेगा हमारे प्रयासों के कारण। आने वाला है उसके लिए कोई मेहनत करने की जरूरत नहीं क्योंकि वो जन्म से ही तय करके बैठा है कि जाने है एक बार बाबा के दरबार में जाना है लेकिन वो एक रात यहां तब रुकेगा उसके लिए हम ऐसी व्यवस्था करें तब ऐसी व्यवस्था विकसित करें और एक बार रात रुक गया तो यहां के 5-50 नौजवानों को रोजगार मिलना ही मिलना है। वो 200-500-1000 रुपए खर्च करके जाएगा जो हमारे बनारस की इकॉनोमी को चलाएगा और हर दिन ऐसे हजारों लोग आते हैं और रुकते हैं तो पूरी Economy यहां कितनी बढ़ सकती है लेकिन इसके लिए ये छोटी-छोटी चीजें काम आ सकती हैं।

हमारे हर स्कूल में कैसा हो, हमारे जो सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, परंपरागत जो हमारे ज्ञान-विज्ञान हैं उसको तो प्रस्तुत करे लेकिन साथ-साथ समय की मांग इस प्रकार की स्पर्धाएं हो सकती हैं, मान लीजिए ऐसे नाट्य लेखक हो जो स्वच्छता पर ही बड़े Touchy नाटक लिखें अगर स्वच्छता के कारण गरीब को कितना फायदा होता है आज गंदगी के कारण Average एक गरीब को सात हजार रुपए दवाई का खर्चा आता है अगर हम स्वच्छता कर लें तो गरीब का सात हजार रुपए बच जाता है। तीन लोगों का परिवार है तो 21 हजार रुपए बच जाता है। ये स्वच्छता का कार्यक्रम एक बहुत बड़ा अर्थ कारण भी उसके साथ जुड़ा हुआ है और स्वच्छता ही है जो टूरिज्म की लिए बहुत बड़ी आवश्यकता होती है। क्या हमारे सांस्कृतिक कार्यक्रम, नाट्य मंचन में ऐसे मंचन, ऐसे काव्य मंचन, ऐसे गीत, कवि सम्मेलन हो तो स्वच्छता पर क्यों न हो, उसी प्रकार से बेटी बचाओ भारत जैसा देश जहां नारी के गौरव की बड़ी गाथाएं हम सुनते हैं। इसी धरती की बेटी रानी लक्ष्मीबाई को हम याद करते हैं लेकिन उसी देश में बेटी को मां के गर्भ में मार देते हैं। इससे बड़ा कोई पाप हो नहीं सकता है। क्या हमारे नाट्य मंचन पर हमारे कलाकारों के माध्यम से लगातार बार-बार हमारी कविताओं में, हमारे नाट्य मंचों पर, हमारे संवाद में, हमारे लेखन में बेटी बचाओ जैसे अभियान हम घर-घर पहुंच सकते हैं।

भारत जैसा देश जहां चींटी को भी अन्न खिलाना ये हमारी परंपरा रही है, गाय को भी खिलाना, ये हमारी परंपरा रही है। उस देश में कुपोषण, हमारे बालकों को.....उस देश में गर्भवती माता कुपोषित हो इससे बड़ी पीड़ा की बात क्या हो सकती है। क्या हमारे नाट्य मंचन के द्वारा, क्या हमारी सांस्कृतिक धरोहर के द्वारा से हम इन चीजों को प्रलोभन के उद्देश्य में ला सकते हैं क्या? मैं कला, साहित्य जगत के लोगों से आग्रह करूंगा कि नए रूप में देश में झकझोरने के लिए कुछ करें।

जब आजादी का आंदोलन चला था तब ये ही साहित्यकार और कलाकार थे जिनकी कलम ने देश को खड़ा कर दिया था। स्वतंत्र भारत में सुशासन का मंत्र लेकर चल रहे तब ये ही हमारे कला और साहित्य के लोगों की कलम के माध्यम से एक राष्ट्र में नवजागरण का माहौल बना सकते हैं।

मैं उन सबको निमंत्रित करता हूँ कि सांस्कृतिक सप्ताह यहां मनाया जा रहा है उसके साथ इसका भी यहां चिंतन हो, मनन हो और देश के लिए इस प्रकार की स्पर्धाएं हो और देश के लिए इस प्रकार का काम हो।

मुझे विश्वास है कि इस प्रयास से सपने पूरे हो सकते हैं साथियों, देश दुनिया में नाम रोशन कर सकता है। मैं अनुभव से कह सकता हूँ, 6 महीने के मेरे अनुभव से कह सकता हूँ पूरा विश्व भारत की ओर देख रहा है हम तैयार नहीं हैं, हम तैयार नहीं हैं हमें अपने आप को तैयार करना है, विश्व तैयार बैठा है।

मैं फिर एक बार पंडित मदन मोहन मालवीय जी की धरती को प्रणाम करता हूँ, उस महापुरुष को प्रणाम करता हूँ। आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद

अमित कुमार / हरीश जैन/ मुस्तकीम खान